मासिक—

मानव मन्दिर

संरक्षक :

परम दयाल पं० फकीरचन्द जी महाराज

सम्पादक :

सेठ दुर्गादासजी

२	फरवरी १९७६	संख्या १०

स्त्री जाति

लेखक :—

सेठ दुर्गादास साहिब चण्डीगढ़

राधास्वामी ! हिन्दु जाति को इस बात का मान है कि वह स्त्री जाति का यथा योग्य मान करती है बल्कि हर एक व्यक्ति को स्त्री जाति को बड़े मान प्रतिष्ठा से देखना चाहिए चाहे स्त्री छोटी हो या बड़ी, जवान हो या बूढ़ी, स्त्री को माता की दृष्टि से देखो। क्योंकि इसने मानव को जन्म दिया है। जीवमात्र की जन्म दाता है इसकी कोख से बड़े-बड़े योधा, बहादुर, बुद्धिमान, विद्वान, विज्ञानी, अबतार सन्त महात्मा, चक्रवर्ति राजे और महाराजे पैदा हुये। स्त्री को अवला मत कहो। स्त्री बड़ी भारी शक्ति है। यह शक्ति देती है। पहले पहल हर एक ने माता से शक्ति ली। स्त्री गुरु है। माता ने पहले अपने बच्चे को सिखाया, समझाया और पढ़ाया स्त्री शक्तिमाता है। स्त्री गुरु माता है। स्त्री माता है।

इसलिए स्त्री का स्थान मानव के दाई ओर है। स्त्री के मान का अनुमान लगाओ कि हिन्दु भगवान का नाम जब लेते हैं, पहले स्त्री का नाम लिया जाता है जैसे सीता राम राधे कृष्ण।

खेद है कि स्त्री जाति को अपनी योग्यता का ज्ञान नहीं है अपनी शक्ति का पता नहीं है। स्त्री वह शक्ति है, जब यह अपने आपे में आ जाती है तो रानी झाँसो बन जातो है। नंगो तलवार लेकर घोड़े पर सवार होकर शत्रु के छक्के छुढ़ा देती है। जब इसके सिर में पति का प्यार समा जाये तो राम के साथ चौदह साल जंगल में व्यतीत कर देता है वर्तमान काल को देखो। श्रीमती इन्द्रागांधी संसार में एक महान स्त्री है जो बड़ी योग्यता से भारतवर्ष की नेता बनी हुई है।

स्त्री को सती कहते हैं। यह केवल भारतवर्ष की देवियों में दलेरी है, उत्साह है, और प्रेम है कि वह अपने पति की लाश के साथ जीवित जल मरती हैं ऐ स्त्री जाति ! तुमको प्रणाम है, तू भूल गई कि तू कौन है। भूल गई कि तू पतिव्रता स्त्री है। तू भूल गई कि तू साक्षात देवी है। तू भूल गई कि पति सेवा में

संसार तुम्हारा मुकाबला नहीं कर सकता । ऐ भारत माता ! तुम्हारे जैसा त्याग इस संसार में कोई नहीं कर सकता है । तुमने अपना नाम त्याग दिया और अपने पति का नाम धारण कर लिया । तुमने अपने घर का त्याग किया और अपने पति के घर को अपनाया । तुमने अपना परिवार छोड़ा पति के परिवार को अपना लिया । तुमने अपने कुल और अपने निशान का त्याग किया और अपने पति के कुल को ग्रहन कर लिया । तू सचमुच त्याग की मूर्ति है । यह सब कुछ तूने अपने पति के प्यार में किया । तुमने अपना सब कुछ पति पर न्योछावर कर दिया ऐसा उदाहरण और न मिलेगा । तू धन्य है ।

ऐ स्त्री जाति ! ऐ भारत की माता !! मैं अपका आदर करता हूं, सम्मान करता हूं । मैं आपका बच्चा हूं । मैं यह उत्साह नहीं कर सकता हूं कि आपको पाठ पढ़ाऊं । लेकिन मेरा यह कर्तव्य बनता है कि आपकी योग्यता की आपको याद कराऊं । मेरा यह विषय लिखने का केवल यह एक उद्देश्य है कि स्त्री जाति को परमार्थ का एक नुक्ता बतादूं । यदि स्त्री

जाति यह पारमार्थिक समस्या समझ जाये तो स्त्री जाति का बेड़ा पार है।

ऐ स्त्री जाति ! यह तेरी शान नहीं है, तेरी आन नहीं है, यह तेरा मान नहीं है कि तू किसी साधू की टांगें दबाये। किसी दूसरे पुरुष के पांव पर मत्था टेके। किसी दूसरे व्यक्ति को अपना गुरु धारण करे यह तुझको शोभा नहीं देता। यह पतिव्रता स्त्री का कर्तव्य नहीं है। तू अनूसूया है, तू शकुन्तला है' तू सीता है तू पारवती है। पारवति ने अपना इष्ट शिव जी महाराज को बनाया। इनकी पूजा करती रही। सीता ने अपने राम को गुरु समझा। इसको अपना इष्ट देव माना। उसकी पूजा करती रही। तू भी अपने राम की टांगे दबाया कर। अपने राम के चरणों पर सिर झुकाया कर। अपने राम को अपना इष्ट धारण कर। अपने राम की पूजा किया कर। अपने राम का ध्यान किया कर। अपने राम के नाम का सुमिरन किया करो तुमको सब कुछ मिलेगा। जो तू कहेगी सच होगा। सरस्वति तुम्हारी जवान पर रहेगी। जो तू काम करेगी सिद्ध होगा सिद्धी शक्ति तेरी सेवा में रहेगी तुमको संसार में

मान मिलेगा, खुशी मिलेगी शान्ति मिलेगी। तुम मुक्त हो जाओगी। प्रभु के दर्शन होंगे और सतलोक में तुम्हारा धाम होगा।

रामायण में वर्णन आता है। चार प्रकार की स्त्रियें होती हैं। जो सब से अच्छी स्त्री है, मैं इसका यहां पर वर्णन करूंगा। ऐसी स्त्री को पदमनी कहते हैं। मैं सब स्त्रियों को पदमनी कहूंगा। पदमनी वह पतिव्रता स्त्री है जिसको संसार भर में कोई पुरुष दिखाई नहीं देता। इसको सपने में भी कोई पुरुषदिखाई नहीं देता इसकी दृष्टि में केवल इसका पति संसार भर में एक पुरुष है। यह किसी और को पुरुष ही नहीं समझती।

ऐसी पतिव्रता स्त्री के लिए परमार्थ बहुत सहल है इसको कुछ करना धरना नहीं है। केवल अपने पति को गुरु मानकर, अपने पति का ध्यान करना और अपने पति को परमेश्वर का स्वरुप समझ कर इसकी पूजा करना इसका परमार्थ है।

पदमनी को किसी स्थान पर, किसी मन्दिर में, किसी गुरुद्वारे में और किसी दूसरे पुरुष के समीप नहीं जाना चाहिए। ऐसी पतिव्रता स्त्री को ऐसा परमार्थ मिलेगा जिसके लिए बड़े बढ़े भक्त, बड़े बड़े

ज्ञानी, ध्यानी कई साल अभ्यास करते हैं। जंगलों में भटकते फिरते हैं। सन्यास लेते हैं। भेस बनाते हैं।

आ हा ! कितनी सुन्दर बात मैं आपको बताता हूं मेरी प्यारी माताओं यह कथा एक पतिव्रता स्त्री को है। आप देखिये कि पतिव्रता स्त्री क्या कुछ कर सकती है। अत्रे ऋषि ने ब्रह्मा, विष्णु और शिव जी महाराज को निमन्त्रण दिया कि मेरे घर अमुक दिन भोजन करना। उन्होंने मान लिया। आप सब पधारे और ऋषि जी को कहने लगे कि आपका निमन्त्रण मान लिया गया है। भोजन करेंगे लेकिन एक शर्त है कि अनुसूया नंगी हो कर हम को भोजन कराये। अब ऋषि जी सोच में पड़ गये। चकित हुये कि क्या किया जाये। आखिर वह अपनी धर्म पत्नी अनुसूया के पास गये और उसको सारा हाल सुनाया कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव जी महाराज ने एक शर्त लगा दी है कि भोजन हम करेगें यदि अनुसूया नंगी हो कर हमको भोजन कराये।

वाह री, अनुसूया ! इसने हंसकर उत्तर दिया मुझे स्वीकार है मैं ऐसा ही करूंगी। महमान घर पर पधारे। सबको आसन दिया गया। सत्कार किया गया। अनुसूया ने अपने पति के पूजा के लोटे से पानी लेकर

अतिथियों पर इस पानी के छींटे छिड़क दिये। फिर क्या था। पतिव्रता स्त्री का सत रंग लाया। तीनों महमानों ने बाल रूप धारण कर लिया। दो दो, तीन तीन साल के बच्चे बन गये और अनुसूया ने नंगी होकर माता के रूप में आकर इन सबको भोजन कराया।

यह पतिव्रता स्त्री की शक्ति है। पतिव्रता स्त्री का बल। ब्रह्मा, विष्णु और शिव जो महाराज जैसे पवित्र और इतनी बड़ी शक्ति रखने वालों पर एक पतिव्रता स्त्री ने विजय पाई। आप पतिव्रता स्त्री हो आप मेरी माता हो। आप जो चाहे कर सकती हो इसलिए आपके लिए यह शोभा नहीं देता कि आप किसी दूसरे पुरुष की ओर आंख उठाकर देखो।

आओ माताओ, मैं आपको आज कल की एक घटना सुनाऊं कि एक माता बीमार हो गई। किसीने कहा कि महाराज जी आप सब के पाप ले लेते हैं। बीमारी ले लेते हैं आप क्यों नहीं अपनी बीमारी महाराज जी को दे देते ? सुनिए ! सुनिए ! माता जी ने क्या फरमाया। मैं ऐसा कभी तीन काल नहीं करूंगी। अपने पति को अपना पाप अपनी बीमारी

कभी न दूंगी। यह है पतिव्रता स्त्री का धर्म। मौत मंजूर है, लेकिन पति को कष्ट देना स्वीकार नहीं है।

आग लगे आसमां को, झर झर गिरें अंगार।
गर न होते जग में सन्त जन, जल मरता संसार।

ऐ माताओ! ऐ पतिव्रता स्त्रियो!! आसमान धरती और संसार आपके बलबोते पर खड़ा है। आपकी सतता से संसार में सच्चाई का बोल बाला है। आप धन्य हैं। आप सबको मैं प्रणाम करता हूं।

बाबा फरीद ने कई साल जंगल में तप किया। इसको अपनी शक्ति का पता लग गया। इसने कहा कि चिड़िओ मर जाओ, खेत में सब चिड़ियें मर गईं। फिर बाबा फरीद ने कहा कि चिड़ियो जीवित हो जाओ। चिड़ियाँ सब जीवित हो गईं। वह जंगल से घर वापिस आ रहा था रास्ते में प्यास लगी। कुएं पर आया। वहाँ एक लड़की पानी निकाल रही थो। इसको पानी पिलाने के लिए कहा। इसने सुनी अनसुनी कर दी। पानी पिलाने में कुछ समय लग गया। फरीद को क्रोध आ गया तो लड़की ने कहा कि मैं

चिड़ी नहीं हूं कि मर जाऊंगी। फरीद चकित हुआ। इसने लड़की से पूछा। तूने यह दौलत कहां से पाई। लड़की ने कहा कि एक रात पति ने पानी मांगा। मैं पानी का गिलास लेकर आई तो मेरा पति सो गया। मैं इसी तरह सारी रात खड़ी रही। इन्तजार करती रही कि मेरा पति उठकर पानी पी लेगा। मैंने अपने पति को सेवा से यह सच्चाई पाई है। जिस सच्चाई के लिए, जिस शक्ति के लिए, जिस सिद्धि शक्ति के लिए फरीद ने काठ की रोटी पेट पर बान्ध कर कई साल तप किया था।

यह है पति सेवा का बल, पति सेवा की शक्ति। आप भी तप के बिना, साधन के बिना यह शक्ति प्राप्त कर सकती हो।

सब को राधास्वामी।

सम्पूर्ण विवेक

सत्संग हजूर परम दयाल जी महाराज मानवता मंदिर होशियारपुर ।

दिनांक 11 मई 1975

गुरु गुरु मैं निस दिन गाता, गुरु के चरण रहे मन राता ।
गुरु मेरे समरथ दीन दयाला, गुरु परहित गुरु हैं प्रतिपाला ।
गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु महेषा गुरु नारद सारद गुरु शेषा ।
गुरु नाम गुरु अधारा, गुरु वार गुरु भव के पारा ।
गुरु समुन्द्र शशि गुरु सुख राशि, गुरु व्यापक गुरु घट २ वासी ।
गुरु सत चित आन्नद की खानी, गुरु हैं दाता गुरु है दानी ।
गुरु प्रकाश गुरु भानु महाना गुरु समुन्द्र गुरु बुन्द समाना ।
दोहा :—गुरु महिमा अति अगम है, गुरु वार न पार ।
जित देखूं गुरु दृष्टि में, गुरु हैं सब के सार ।

राधास्वामी । यह शब्द आपने सुना और मैंने भी सुना । मैं जन्म से साधारण ब्राह्मण था । राम कृष्ण

और भगवान को मानने वाला था। किसी वस्तु की खोज के क्रम में १९०५ में अपने एक दृश्य द्वारा हजूर दाता दयाल महर्षि शिववृतलाल जी महाराज के चरणों में गया था। उन्होंने गुरुमत की शिक्षा दी। मैं जीवन में यह देखना चाहता था कि सचाई क्या है ? तुम पुराणों को पढ़ो। यदि शक्ति पुराण है तो उसमें विष्णु को ही सब कुछ बताया गया है और यदि शिव पुराण है तो उसमें शिव को ही सब कुछ माना गया है।

मैंने प्रण किया था कि जीवन में जो कुछ मेरा अनुभव होगा वह संसार को बता जाऊंगा। मगर मुझे किसी बात का दावा नहीं। गुरु नाम है समझ विवेक और ज्ञान का यदि शिवजी को बड़ा माना तो आदमी की बुद्धि ने मान। यदि उसको समझ और बुद्धि न होती तो वह बड़ा कैसे मानता ? शिव जी को बड़ा मानने का मूल कारण Root Cause क्या है ? गुरु। गुरु नाम है ज्ञान, समझ और विवेक का। यदि किसी ने विष्णु को बड़ा माना तो वह भी आदमी की बुद्धि ने ही माना। तो संसार में मुख्य वस्तु क्या है ?

गुरु। गुरु वह है जो अन्धकार को दूर करता है और सच्ची बुद्धि देता है। इसलिए बुद्धि मान गई कि सबसे उत्तम दर्जा गुरु अर्थात समझ, विवेक, ज्ञान और अनुभव का है। इस में संदेह नहीं कि यह समझ विवेक, ज्ञान और अनुभव मानव के अपने ही अन्तर में है। लेकिन जब तक बाहर का कोई आदमी उस को यह बात समझायेगा नहीं, वह समझ नहीं सकता। इसलिए बाहर के गुरु की महिमा है। उस के बचनों से और उसके सत्संग से तुम्हारे अन्तर गुरु प्रगट हो जायेगा अर्थात तुमको समझ आ जायेगी। लेकिन संसार गाफिल है। बाहर के मानव रूपी गुरु को पकड़ कर बैठ गया है गुरु का जो असली अर्थ और भाव है उसको तो कोई पकड़ता नहीं है। लेकिन, हर एक आदमी इस बात को समझ भी नहीं सकता क्योंकि अभ्यास की भी श्रेणियें और दर्जे हैं। यह गुरमत केवल कलियुग के जीवों के लिए है। सतयुग त्रेता, द्वापर के जीवों के लिए गुरु मत नहीं है। कलयुग में जीवों की बुद्धि तेज़ हो जाती है। जब किसी की बुद्धि तीव्र हो जाती है तो फिर वह

why how and what अर्थात कैसे क्यों और क्या कहता है अर्थात खोज करना चाहता है रामायण में लिखा है।

ध्यान प्रथम जुग मख दूजे, द्वापर परितोषित प्रभु पूजे।
कली केवल इक नाम आधारा, श्रुति समृति सन्तमत सारा।

आप देखो कि एक साधारण आदमी। उसकी बुद्धि अधिक विकसित नहीं है। अर्थात उसकी बुद्धि इतनी तेज नहीं है लोग उसकी सफलता के कारण उससे प्रेम करते हैं ऐसे ही बच्चा जिसकी वुद्धि अभि विर्कासित नहीं हुई है, वह भी अपनी ध्यान शक्ति से अपनी मां को या औरों को अपनी ओर खींच लेता है। इसलिए यह सन्तों का नाम सबके लिए नहीं है। यह तो हम गुरुओं ने अपने मान और बढ़ाई के लिए सन्तमत का प्रचार कर दिया और सबको नाम देना आरम्भ कर दिया। नाम तो उसके लिए है जिसकी बुद्धि तेज हो गई। जिस की बुद्धि तेज नहीं है उस पर कलियुग का हमला नहीं होता।

मानव पहले अपनी आवश्यकतों को ध्यान शक्ति से पूरा करता है। जब वह बड़ा हो जाता है तो उसकी ध्यान शक्ति में कमज़ोरी आ जाती है फिर

वह अपनी आवश्यकतों को परिश्रम और फ़िकर से पूरा करता है अर्थात यज्ञ करके अपना उद्देश्य पूरा करता है। फिर जब और बड़ा हो जाता है तो वह कामुक अर्थात हवसी हो जाता है और आवश्यकतायों के पूरा न होने के कारण दुखी होता है। तो फिर वह ईश्वर का सहारा लेता है। फिर जब उसको अपने कर्म धर्म और प्रभु पूजा से भी शान्ति नहीं मिलती तो फिर नाम की ओर आता है। नाम क्या वस्तु है ? नाम वह अवस्था जहाँ आदमी की सब वासनाएं और कामनायें समाप्त हो जाती हैं।

इसलिए नाम केवल अधिकारी जीवों के लिए है। यही कारण है कि सन्त सबको नाम नहीं देते। जो गुरु सबको नाम दे रहा है वह गुरु नहीं है। हर एक आदमी की प्रकृति और स्वभाव जुदा २ है। गुरु उसकी प्रकृति और स्वभाव का अध्ययन करके उसको सुख और शान्ति प्राप्त करने का उपाय बताता है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि फकीर। चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैंने जो स्वयं अनुभव किया वह कहा। मगर दावा मुझे किसी बात का नहीं है।

कल से यहां कुछ व्यास के सत्संगी आये हुये है। उनको वहां से नाम मिला हुआ है। वेचारे बहुत साधारण लोग हैं। हर महीने सिर पर समान रखे हुये व्यास जाते हैं और फिर वापस आते हैं। उनसे पूछो कि नाम तो मिला हुआ है क्या तुम्हारा शब्द खुला हुआ है? उन्होंने एक सहारा पकड़ा हुआ है और वे उसी सहारे में प्रसन्न हैं। इस वास्ते गुरु की महिमा है।

गुरु गुरु मैं निस दिन गाता, गुरु के चरण रहे मन राता।

संसार भूला हुआ है और बाहर के गुरु के पैरों को ही गुरु के चरण समझता है। हजूर राय सालिग राम साहिब जी महाराज जिन्होंने राधास्वामी मत चलाया है उन्होंने अपनी प्रेम वाणी में लिखा है कि गुरु शब्द स्वरुपी राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरन प्रकाश हैं। उन्होंने अपने सत्गुरु स्वामी जी महाराज की बहुत सेवा की वह उनके लिए चक्की पीसा करते थे उनकी पालकी स्वयं उठाया करते थे और उनकी टटी तक उठाने में आगा पीछा नहीं करते थे यद्यपि एक उच्च अधिकारी पोसट मास्टर जरनल, के पद पर थे जब वे स्वंय गुरु पदवी पर

आये, तब उन्होंने अनुभव के बाद यह बात लिखी है की गुरु शब्द स्वरुपो राधास्वामी दयाल हैं और उनके चरन प्रकाश है। यदि कोई गुरु को सेवा करना चाहता है तो वह गुरु के चरन जो प्रकाश है उसको पकड़े। हिन्दुओं में गायत्री मन्त्र दिया जाता है "ओं भूर्भवः स्वः ततसीवर्तु वरेणियं भर्गो देवस्य धीमहि धीयो यो नः प्रचादयात्"। अर्थात जाग्रत स्वप्न और सुषुप्ति से परे जो सावित्री है उसके दर्शन करो। यह सब वाणी का जाल है। जिसने शिवजी को माना उन्होंने शिवजो को ही सबसे बड़ा माना। और जिसने विष्णु जी को माना उसने विष्णु जी को ही सबसे बड़ा माना। अपने अपने विश्वास के अनुसार जिसने जिसको अपना इष्ट माना उसने उसको ही सबसे बड़ा माना। यह ठीक है और मानना भी चाहिए। लेकिन असली वस्तु जिसने हमको शान्ति देनी है वह है हमारे अन्तर प्रकाश। हिन्दु जाति स्वयं भूल गई। इनका भी कोई दोष नहीं। हिन्दु धर्म एक समुन्द्र है जिसमें सबके लिए खुराक माजूद है। अपनी अपनी प्रकृति के अनुसार हरएक जीव उससे लाभ उठाता है।

अन्तर में देवो प्रकट होती है, या बाबा फकीर प्रकट होता है यह तुम्हारा अपना ही मन है। बाहर से न कोई देवी आती है, न देवता आता है,न बाबा फकीर आता है न राम आता है न कृष्ण आता है और न ही कोई और गुरु आता है। यदि किसी की कोई बात ठीक हो गई तो गुरु महाराज ने उसका ढढोरा चेलो द्वारा पिटा दिया। कि हमगये थे और कहा था और यदि सच न हुई वह बात तो कह दिया कि मैं नहीं था। तुम्हारातो वह अपना ही काल रूपी मन था।

हमारे मन में नाना प्रकार के विचार पैदा होते हैं और जो रूप हमारे अन्तर प्रकार हैं वह हमारे ही विचार और हमारी ही वासनाओं के प्रतिनिधि होते हैं। एक घटना सुनो। थोड़े ही समय की बात है कि एक व्यक्ति कृष्ण लाल जैन का मुझे पत्र आया उसका मुझ विश्वास होगा। वह लिखता है कि बाबा ! अमुख तिथि को मेरी बहन का विवाह था। मुझे यह चिन्ता लगी रहती थी कि विवाह प्रकार से हो जाये। विवाह के दिनों में दो तींन दिन आप मेरे साथ रहे और मुझे हर एक काम में Guide करते रहे। जब विवाह का काम समाप्त हो गया

आप आने लगे तो मैंने कहा कि महाराज ! मैं आप की क्या सेवा करूं ? आपने कहा कि आज ही मानवता मंदिर को 11/- रुपये मनीआर्डर कर दो। इसके बाद आप चले गये। मैं किसी काम में लग गया। फिर मनीआर्डर भेजना याद आया तो मैं डाकखाना गया। उन्होंने कहा कि अब समय हो चुका है, मनीआर्डर कल होगा। क्योंकि आपने कहा था कि मनीआर्डर आज ही भेज दो इस लिए मैंने तार द्वारा मनीआर्डर भेजा।

अब में तो गया नहीं। कौन गया ? यह सब उस के अपने ही मन का खेल था क्योंकि उसको विवाह की चिन्ता थी और मुझ पर विश्वास था। विवाह अच्छी प्रकार हो जाने के लिए हर समय मेरा ध्यान करता था तो उसकी ध्यान शक्ति ने मेरा रूप प्रगट कर लिया और वह उसको (Guide) करता रहा। यदि में विवाह मैं गया होता तो और लोग भी वहां मिलते। कल फिर उसका पत्र आया है कि में आपकी शिक्षा को फैलाने के लिये एक इन्ट्रनेशनल सोसाईटी बनाना चाहता हूं लेकिन मेरी आर्थिक दशा अच्छी नहीं है और में दुखी हूं और साथ ही

यह भी लिखता है कि इस समय आप मेरे सामने खड़े हैं और आपने मुझे अभी यह कहा कि चिन्ता मत कर, तुम्हारे सारे काम हो जायेंगे। यह सब क्या है ? आदमी के अपने ही मन का चक्कर है। यह सारे धर्म और पंथ मन के चक्कर मैं हैं। तभी तो स्वामी जी महाराज ने कहा कि पिछले सब धर्म मन के खेल हैं। मन के चक्कर से निकलने के लिए ही सन्तों का मार्ग है। सन्तों के मार्ग में आज्ञा है कि गुरु के चरण अर्थात प्रकाश को पकड़ो। अन्यथा मन चक्कर देता ही रहेगा। इस चक्कर में हम दुख भी हैं और सुख भी हैं। आप लोग आये हैं। में अपना कर्तव्य पूरा कर जाना चाहता हूं। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने एक शब्द लिखा हैं :—

मन के नाच सारे नाचें, ऋषि मुनि नर देवा।
ऊँची नीची चाल चलें, द्वन्द्व जग की अग्नि जलें।
दुविधा की गोद पलें, पावें नहीं भेवा॥

सब मन के चक्कर में हैं। किसी को भेद का पता नहीं है कि ऐ मानव ! बाहर से तुम्हारे अन्तर न देवी आती है, न देवता आता है, न बाबा फकोर आता है, न हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज

आते हैं, न राम आता है और न कृष्ण आता है। जिस प्रकार के संस्कार तुम्हारे मन पर पड़े हुये होते हैं वही रूप धर कर तुम्हारे सामने आते हैं। तुमको इस बात का पता नहीं है। इस लिए तुम इनके चक्कर मैं फंस जाते हो। इस ज्ञान के न होने के कारण इस समय क्या हो रहा है ? किसी के अन्तर देवी प्रगट हो गई। उसने किसी का सिर काट कर बलिदान दे दिया, पकड़ा गया और मुकदमा चला। बालयोगेश्वर के एक अमेरिकन शिष्य ने तीन आदमियों को मार दिया। पुलिस ने पकड़ लिया। उस आदमी ने कहा कि मेरे गुरु महाराज हंसा जी ने मेरे अन्तर आकर मुझे कहा कि अमुक २ ग्यारह आदमियों को मार दो। तब मैंने तीन को मार दिया। अभी आठ शेष हैं। यह समाचार अखबार में छपा। मैं तुम लोगों की आंखें खोलना चाहता हूं। मैंने पाखण्ड का जाल नहीं बनाया। हजूर दाता दयाल महाराज की आज्ञा थी कि फकीर ! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। क्या बदलूं ? शिक्षा तो वही है जो ऋषि, कबीर साहिब या राधास्वामी दयाल दे गये। केवल वर्णन शैली मेरी अपनी है :

मन के नाच सारे नाचें, ऋषि मुनि नर देवा।
ऊँची नीची चाल चलें, द्वन्द्व जग की अग्नि जलें।।

जो आदमी देवी का रूप बना कर, बाबे फकीर का रूप बना कर या विष्णु का रूप बना कर अपने अन्तर में पूजता है, वह अपने ही मन को पूजता है और वह काल मत है। इस में कई बार लाभ भी हो जाता है और कई बार हानि भी हो जाती है। कई बार यह विचार ठीक भी हो जाता है और कई बार ग़लत भी हो जाता है :

मन से बचे भक्त दास, सुख दुख की त्याग आस।
राधास्वामी संग निवास, गुरु के नाम लेवा।

जो राधास्वामी संग निवास, करता है वह बच जाता है। राधास्वामी क्या है? राधास्वमी शब्द स्वरूप है और उनके चरण प्रकाश है जो शब्द और प्रकाश का साधन करता है वह मन के चक्कर से बच सकता है। हमारा मन हमारा रक्षक है और भक्षक भी है। कबीर साहिब का एक शब्द सुनो।

भाड़ परै यह देश बिराना भवसागर उवगाहा।
भक्त अभक्त सबन को बोरे, कोई न पावे थाहा।

वह कहते हैं कि आग लगे इस वैराने देश को। इसने चक्कर में डाला हुआ है। इस मन का कोई थाह नहीं। अन्तर में देवी प्रकट हुई और कहा कि वलिदान कर दे। भक्त और अभक्त दोनों को ही मन खा जाता है। यदि कोई भक्त बचता है तो वह भक्त बचता है जिसको कोई पूर्ण गुरु मिला हुआ है यह सच्चाई कौन बताता है ? सब अपने २ जाल, अपने २ डेरे और अपने २ पन्थ में फंसाने का प्रयत्न करते हैं। कोई सच्ची बात नहीं बताता। जीवों का हमदर्द कोई गुरु दिखाई नहीं देता। सब अपनी मान प्रतिष्ठा और अपने नाम में फंसे हुये हैं। इंजीनियर साहिब ! (Sh. J. I. Gian Chandani) आपके अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ और कुछ दान आदि करने को कहा। आपने मुझे लिखा मैंने आपको क्या उत्तर दिया ? मैंने कहा कि मैं आपके अन्तर नहीं गया वह रूप आपका ही मन था। मैं संसार में पहला ही फकीर हूं जिसने यह सचाई संसार को बताई है। इसलिए मैं कहता हूं कि मैं समय का सन्त सत्गुरु हूं। सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। कोई किसी के अन्तर नहीं जाता। इस अज्ञान के कारण कोई हिन्दु बन

गया, कोई मुसलमान बन गया और संसार अनेक धर्मों और पंथों में बट गया। एक दूसरे के विरुद्ध घृणा, द्वेष पैदा हो गये और "जै शिव शंकर, सत श्री अकाल और अल्ला हो अकवर" के नारे लगा कर एक दूसरे का सिर काटने लग गये। इस अज्ञान को नाश करने के लिए सन्तमत आया और सचाई की घोषणा की। मगर इस मत के (अनुयायी) गद्दियों और डेरों में फंस गये और अपने मान प्रतिष्ठा के कारण लोगों को असलियत नहीं बताई।

भच्छक आप लीला विस्तारा, कला अंनत दिखावै।
भच्छक को रच्छक करि जानै, रच्छक चीन्हि न पावै।

तुम्हारा मन ही रक्षक है और तुम्हारा मन ही भक्षक है। यह मन अनेक प्रकार के खेल करता है किसी भक्त के अन्तर देवी प्रकट हुई और कुछ कह दिया। वह है तो भक्षक मगर, वह भक्त उसको रक्षक समझता है। परिणाम क्या निकला ? कहीं लाभ भी हो जाता है और कहीं हानी भी हो जाती है।

भजै जाहि सो भच्छक, रच्छक रहा निनार।
भर्म चक्र में परे जीव सव, लखै न शब्द हमारा।

जिसको तुम भजते हो जिसकी तुम पूजा करते हो वह तो तुम्हारा अपना ही मन है। लेकिन, कोई गुरु इस भेद को बताता नहीं। सब हमको अपनी भेड़ें बना कर रखते हैं। हजरत इसा मसीह भी यही कहा करते थे कि यह सब मेरी भेड़ें हैं। इसका परिणाम क्या निकला ? यह सारा संसार जानता है। तभी तो स्वामी जी महाराज ने इन सबका खण्डन किया है। मैं चकित हुआ करता था कि सन्तमत को क्या अधिकार है जो इस ने सब का खण्डन किया है। मैंने सारा जीवन इस खोज में व्यतीत कर दिया तब जाके इस असलियत की समझ आई है स्वामी जी महाराज ने और कबीर साहिब ने सब का खण्डन तो कर दिया लेकिन कारण नहीं बताया इसलिए लोगों ने उनका विरोध किया। मैं असलियत को खोल कर बताता हूं। और कारण बताता हूं। इसलिए मेरा आज तक किसी ने विरोध नहीं किया।

सारा संसार मन के नाच नाच रहा है। बजाय मेरी पूजा करने के मेरी बात को ध्यान से सुनो और उस पर अमल करो। मन की चालों में मत आओ।

अपने २ हालात अपने गुरुओं से बताओ ताकि वह तुम को सरल उपाय बतायें :

मन के नाच सारे नाचें, ऋषि मुनि नर देवा ।
ऊँची नीची चाल चलें, द्वन्द्व जग की अग्नि जलें ।
दुविधा की गोद पलें, पावें नहीं भेवा ॥ मन के नाच ॥
दुचिता पड़ विपत सहें, भली बुरी बात कहें ।
सम चित कर नाहीं रहें, करें काल सेवा ॥ मन के नाच ॥

आजकल के गुरुओं का क्या हाल पूछते हो । एक ब्रह्मचारी किसी डेरे में रहता था । उसका वहां बहुत मान था । एक अच्छे आदमी ने अपने मकान में एक कमरा उसको रहने के लिये दिया हुआ था । एक दिन ब्रह्मचारी जी महाराज ने उस आदमी से कहा कि तुम अमुक दिन मर जाओगे । लग भग एक सप्ताह का मौत का नोटिस दे दिया । उस व्यक्ति ने मुझे सारा समाचार लिखा । मैंने उसको लिख दिया कि घवराओ नहीं । मैं इस बात को नहीं मानता । अब आप सोचो कि ब्रह्मचारी ने यह बात क्यों कही । ब्रह्मचारी को क्योंकि कोई मकान नहीं मिल रहा था उस आदमी ने उसको अपने पास रहने के लिए कुछ समय के लिए स्थान दिया था । ब्रह्मचारी के दिल में यह विचार रहता था कि यही

मकान उसे मिल जाये। इस लिए उसने यह बात कह दी कि यह मर जायेगा। मन की बात को समझना बहुत कठिन है। मैं स्वयं कभी २ गिर जाता हूं। मुझ पर तो आप सत्सगियों की दया हो गई और बात मेरी समझ में आ गई। केवल इस विचार ने कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता मेरा जोवन बदल गया। हर एक विचार के पीछे कोई न कोई कारण होता है। लेकिन आदमी को उस का पता नहीं होता। इस बात को या इस कारण को केवल वह जानता है जो मनोविज्ञान जानता हो। मैं मनोबिज्ञान का मास्टर हूं। मेरे सामने यदि कोई आदमी कोई बात करता है तो मैं तुरन्त समझ जाता हूं कि इस की पृष्ट भूमि (Back ground) अर्थात इस का कारण क्या है ? गुरु ही अच्छो तरह जानता है और जीव की सम्भाल करता है। इसलिए सन्तमत कहता है कि किसी जीवित पूर्ण गुरु की शरन में जाओ। वह तुम्हारी सम्भाल करेगा। जीवन में मेरी यह दशा रही कि जब भी कभी दुख कष्ट आता तो मैं हजूर दाता दयाल जी महाराज को लिख देता। वह जो

आज्ञा देते मैं वही करता। इस से मेरा जीवन सुख से व्यतीत हो गया।

मन से बचे भक्त दास, सुख दुख की त्याग आस।
राधास्वामी संग निवास, गुरु के नाम लेवा ॥ मन के नाच ॥

गुरु क्या है ?

गुरु गुरु मैं निस दिन गाता, गुरु के चरन रहे मन राता।
गुरु मेरे समरथ दीन दयाला, गुरु परहित गुरु हैं प्रतिवाला ॥

गुरु के चरण हैं प्रकाश और प्रकाश ही तुम्हारा हितैषी है। प्रकाश से ही सारी रचना होती है। मगर यह बात बताने वाला बाहर का गुरु है। इसलिए जब तक अपना अनुभव और ज्ञान न हो जाये और अन्तिम अवस्था तक न पहुंच जाओ, बाहर के गुरु को मत छोड़ो। कई आदमी मन की चालों में आकर गुरु को छोड़ जाते हैं। यह गलती है :—

गुरु ब्रह्मा गुरु विष्णु महेशा, गुरु नारद सारद गुरु शेषा ॥

गुरु ब्रह्मा कैसे है ? ब्रह्मा उतपत्ति करता है। उतपत्ति बासना से होती है और यह गुरु बताता है कि तुमने बासना कैसी रखनी है। इसलिए गुरु ब्रह्मा है। ऐसे ही गुरु विष्णु है और शिव है। राधास्वामी

मत की यही बड़ाई है कि वह जीवित पूर्ण गुरु को मानता है। पूर्ण गुरु कौन है ? जिसको शरीर और आत्मा का ज्ञान है वह पूरा गुरु है। श्रीमती इंदिरा गांधी जी और श्रीमान फखरूदीन अली अहमद साहिब भारत के राष्ट्रपति साहिब की अपील पर इस बार मैंने मानवता के बारे में इस वैशाखी के अवसर पर अपने विचारों को प्रकट किया है जो कि जनता जर्नादन हिन्दी के सप्ताहिक समाचार पत्र में छपा है। उसमें मैंने लिखा है कि मानव क्या है और मानव बनने के लिए क्या २ उपाय प्रयोग में लाने चाहियें। सरकार लोगों को मानव नहीं बना सकती। गुरु ब्रह्मा क्या है ? जिन वासनाओं को ले कर स्त्री पुरुष मिलते हैं उस समय के उनके भाव बच्चे में जाते हैं। जब बच्चा पेट में होता है तो उस समय मां के जैसे विचार होगें उनका प्रभाव वच्चे पर पड़ेगा। यह ज्ञान कौन बतायेगा ? बाहर का कोई पूर्ण गुरु। इसलिए गुरु ब्रह्मा है। क्योंकि लोगों को यह ज्ञान नहीं है, इसलिए वर्तमान समय की सतांन शासनहीन है। कोई इन को मानव नहीं वना सकता चाहे मानव धर्म सम्मेलन कर लो, चाहे प्रचार कर लो और चाहे U. N. O. बना लो।

हिन्दूओं में पुरानी संस्कृति क्या है ? सबसे पहले गर्भाधान संस्कार है अर्थात संतान को संतान के विचार से पैदा करो। जिसका गर्भाधान संस्कार गलत है वह बच्चा ठीक नहीं होगा। मैं आप लोगों को समझाने के लिए अपना उदाहरण दिया करता हूं। अपनी गलतिएं कौन बताता है लेकिन मैं बताता हूं ताकि आप लोगोंको इससे लाभ पहूंचे। यह है गुरु ब्रह्मा और ऐसे ही गुरु विष्णु और गुरु शिव हैं।

गुरु नाम गुरु नाम अधारा, गुरु वार गुरु भव के पारा।

यही ज्ञान आदमी को संसार में जीने का भेद बताता है और यही ज्ञान भव से पार जाने का भेद बताता है। इसलिए गुरु की महिमा है।

गुरु समुन्द्र शशी गुरु सुखरासी, गुरु व्यापक गुरु घट-घट बासी।

गुरु सत चित आनन्द की खानी, गुरु है दाता गुरु है दानी।

पार जाने का जो ज्ञान है वह भी गुरु ही देता है। मगर वह ज्ञान पहले से ही तुम्हारे अन्तर मौजूद है। जैसे विद्या तो बच्चे के अन्तर मौजूद है। लेकिन अध्यापक अपनी चेष्टा से उसके अन्तर

जाग्रति पैदा कर देता है। गुरु शारीरिक जीवन को ठीक रखने के लिए और मानसिक और आत्मिक आनन्द लेने के लिए ज्ञान देता है।

गुरु प्रकाश गुरु भानु महाना, गुरु समुद्र गुरु बूंद समाना।

गुरु हर स्थान पर है, प्रकाश स्वरुप है, अनुभव स्वरुप है और अनुभव की एक शक्ति है।

गुरु महिमा अति अगम है, गुरु का बार न पार।
जित देखूं गुरु दृष्टि में, गुरु हैं सब के सार।

गुरु नाम है समझ विवेक और ज्ञान का। गुरु का एक रूप नहीं है। Space में जाते हैं उसके लिए और ज्ञान है, संसार का कारोवार करते हो उसके लिये और ज्ञान है, खेती बाड़ी के लिए और ज्ञान है और कलाकौशल का और ज्ञान है। गुरु एक तत्व है। कहीं स्थूल है, कहीं सूक्ष और कहीं कारण है। सहारा लेने के लिए उसको एक रूप मान लिए जाता है। ध्यान से सुनो! जब तक तुम किसी स्त्री को अपनी पत्नि नहीं मान लेते, तुम काम का सुख नहीं भोग सकते। यद्यपि काम तुम्हारे अपने ही अन्तर में है। मोह के लिए किसी को अपना बेटा, बेटी, स्त्री, बहन या भाई बनाना पड़ता है और लोभ के लिए

सोने या चान्दी आदि को अपना इष्ट बनाना पड़ता हैं। ऐसे ही जब तुम किसी को पूर्ण नहीं मनोगे तब तक तुम ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते। मैंने हजूर दाता दयाल जी महाराज को पूर्ण, मालिक का अवतार माना। इससे जीवन की सब चेतननायें जाग्रत हो गई। और मैं अनुभवी हो गया। यह मेरी सफलता का भेद है। इसलिए जिसको गुरु मानो उस को पूर्ण मानो। जब तुम पूर्ण मानोगे तो यदि वह पूर्ण नहीं भी है तो भी तुम्हारा वह विश्वास तुम को किसी अच्छे स्थान पर पहूंचा देगा, जहां से तुम्हारा काम बन जायेगा।

अपने मन के चक्कर में मत आओ और किसी का सहारा लो। यदि किसी पूर्ण गुरु का सहारा मिल जाये तो यह तुम्हारा अहो भाग्य है। वरना सारा जीवन ठोकरें खाते रहोगे। इसलिए एक इष्ट बनाओ और चलते फिरते उठते बैठते जागते सोते उस को याद करते रहो। फिर प्रकाश में जाने का प्रत्यन करो। यदि प्रकाश नहीं खुला हुआ है और तुम गुरु स्वरुप का ध्यान करते हो तो उस रूप के

साथ बातें मत करो। वे बातें किसी समय तुमको पथभ्रष्ट भी कर देंगी। अच्छी आस रखो और अच्छी बासना रखो। तुम्हारी आस के अनुसार ही वह गुरु स्वरुप तुम को मार्ग दिखायेगा।

'सब को राधास्वामी'

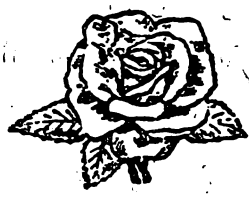

सत्संग हजूर परम सन्त
बाबा फकीर साहिब जी महाराज
मानवता मंदिर, होशियारपुर

स्थान मिसरक तीर्थ दिनांक 17 मार्च, 1975

राधास्वामी । राधास्वामी मत का, सनातन धर्म का, जैनमत, बुद्धमत या सारे मतान्तरों का लक्ष्य क्या है ? मुक्ति, निर्वाण और संसार का सुख । मुक्ति या निर्वाण को प्राप्त करने की विधि गुरु की दया से मिलती है और गुरु की दया बिना ज्ञान नहीं होता । मैंने यह काम किया है । मैं अपनी आत्मा से पूछता हूं कि क्या तेरे इस काम में छल-कपट तो नहीं है । नहीं । विलकुल नहीं । गुरु क्या करता है और गुरु की दया क्या है ।

धन्य धन्य गुरु धन्य दयाला, धन्य उदार सुसहञ्ञा कृपाला ।
तुमरी दया कटी जम फांसी, तुम्हरी कृपा अग्घा नासी ॥

गुरु की दयासे यम की फाँसी कट जाती है। दया तो सत्गुरु की है। मगर, मेरे यम की फांसी कटाने वाले तुम लोग हो अब यह आदमी श्री गोकल सिंह जो बालियां ग्राम से आया हुआ है, यह लोग ब्यास के सत्संगी हैं। इनके यहां ब्यास डेरे का एक साधु सत्संग कराता है। उस साधु के अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ और उसने इन लोगों को बताया। फिर यह अपने साथ आठ आदमी लेकर होश्यारपुर आया मैं उस दिन प्रागपुर, ज़िला कांगड़ा में गया हुआ था। यह लोग मेरे पास वहां पहूंचे और मुझे अपनी घटना सुनाई। मेरा सत्संग सुना और कहने लगे कि बाबा जी! आप हमारे पास पधारें और वहां सत्संग दें।

अब मैं तो इस महात्मा के अन्तर नहीं गया। मैं झूठ नहीं बोलता। लोगों के पत्र आते हैं कि बाबा जी! आप का रूप प्रकट हुआ। हमारा यह काम कर दिया और वह काम कर दिया, लेकिन मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। कौन गया? यम गया। यम का अर्थ है बाहर निकालना। हो सकता है इस ने मेरी कोई किताब पड़ी हो या मेरे बारे इसको किसी

ने कुछ बताया हो और उससे इसको मेरा विचर मिला हो और उस विचार से इसके अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ हो। जब कोई किसी का कोई कपड़ा प्रयोग करता है या किसी की बातें सुनता है तो उसका संस्कार पढ़ता है। मैं जो कुछ कहता हूं उस का प्रभाव मेरे शब्दों में जाता है। आदमी का शरीर रेडियो स्टेशन है। तुम्हारे अन्तर से जो भाव विचार और संकल्प पैदा होते हैं उनका प्रभाव दूसरों पर पड़ता है, कपड़ों पर पड़ता है, जिस वस्तु को तुम छूते हो उस पर पड़ता है। तुम देखते हो जहां कोई किसी प्रकार का केस हो जाता है वहां पुलिस वाले अपने सिधाये हुये कुत्तों को दोषी का कपड़ा जूता या उसकी और कोई वस्तु सूंघा देते हैं और कुत्ता उसी बास को ले कर जहां २ से वह वह दोषी जाता है उस का पीछा करके उस तक जा पहूंचता है। यद्यपि आप लोगों में यह गुण नहीं है मगर कुत्ते को यह पता चल जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि हर एक आदमी के अन्तर से जैसा कि वह है वैसे ही विचार निकलते हैं। बकरे के शरीर से काम की

बदबू आती है। कामी आदमी या कामी जानवर के अन्तर से काम के संस्कार निकलते रहते हैं।

जब लोगों से मुझे पता लगा कि मेरा रूप उनके अन्तर प्रकट होता है उनके काम कर जाता है और मैं नहो होता तो मुझे विश्वास हो गया कि यह सब मन का खेल है और माया है। मैं आगे जाने के लिए विवश हो गया और मेरी यम की फाँसी कट गई। अब मैं साधना करता हूं। जितने भी रूप, रंग, भाव, विचार मेरे अन्तर प्रकट होते हैं मैं उनको माया समझता हूं चाहे वह स्थूल प्रकृति के हो या सूक्ष्म प्रकृति के हों। मैं कभी कभी ऐसा भी अनुभव करता हूं कि जो लोग मेरा ध्यान करते हैं उनकी शकलें मेरे सामने आती है। मगर, मैं उन शकलों की और ध्यान नहीं देता। यदि ध्यान दूं, तो मेरी यम की फांसी नहीं कट सकती। मैं इस आदमी को आपना सच्चा सत्गुरु समझ कर नमस्कार करता हूं तुम लोगों की दया से मेरी फाँसी कट गई। इसलिए यदि तुम किसी सच्चे आदमी की संगत करोगे तो उसकी Radiation से तुम्हारे अन्तर भो सच्चाई आ जायेगी

और किसी बुरे आदमी की संगत करोगे तो उसके अवगुण भी तुम्हारे अन्तर अवश्य आयेंगे ।

अब तुम सोचो कि जिन महात्माओं ने सचाई वर्णन नहीं की और परदा रखा कि हां ! हम जाते हैं तुम्हारे अन्तर, हमारे प्रसाद से तुम्हारे बच्चा हुआ और तुम्हारे अन्त समय पर आकर हम तुमको ले जायेंगे उनकी नीयत क्या साफ है ? वह तो कपटी हैं, चाहे उन्होंने किसी भी नीयत से परदा रखा हो । तो फिर ऐसे महात्माओं की संगत से तुम्हारी यम की फाँसी कैसे कटेगी ? हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरी यम की फांसी कटाने के लिए मुझे यह काम दिया था । मैं उनको तंग किया करता था कि मुझे अपना रूप दिखाओ ।

गुरु मोहे अपना रूप दिखाओ ।
यह तो रूप धरा तुम सरगुण, जीव उबार कराओ ।
रूप तुम्हारा अगम अफरा, सोई अब दरसाओ ।
देखू रूप मगन होय बैठूं, अभय दान दिलवाओ ।
यह भी रूप प्यारा मोको, इस ही से उस को समझाओ ।

इसलिए उन्होंने मुझे यह काम दिया और कहा कि तुम को सच्चे सत्गुरु के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे और वह अब हो गये । यह आदमी पलिया

कलां से आया है। क्यों आया ? क्योंकि, इसके अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ। अब यदि मैं इस महात्मा को सत्गुरु न मानूं तो किस को मानूं ? तुम लोगों की दया से मुझे सार भेद मिल गया कि सन्तमत की बड़ाई क्या है ? मैं ब्राह्मण हूं। मौज राम के मिलने की तलाश के सिलसिले में हज़ूर दाता दयाल जी महाराज के चरणों में एक दृश्य द्वारा ले गई। मैं यह देखना चाहता था कि सन्तमत ने सब मत-मतान्तरों का खण्डन कैसे किया ? सबको काल में किस लिए रखा और सबको अपूर्ण किस वास्ते कहा ? यह देखने के लिए कि सचाई क्या है मैंने सारा जीवन इस खोज में गुजार दिया। अब तुम लोगों की दया से इस भेद का पता लग गया कि देखने, सुनने छूने पढ़ने से या प्रालब्द कर्म के कारण और Radiation से जिस २ प्रकार के संस्कार मस्तिष्क पर पड़ते हैं वही शकलें बना कर सामने आते हैं और बाहर से कोई नहीं आता। मेरे सामने अब तक भी आते हैं। मैं इन रुपों मैं अब रहता तो हूं, मगर, फंसता नहीं। जैसे अब मैं यहां आया हूं आप लोगों ने मुझे घेरा हुआ है। मगर, मैं फंसा हुआ

नहीं हूं, क्योंकि मैं जानता हूं कि मैंने कल को यहां से चले जाना है। यह तो एक तमाशा है। इसलिए में इसमें फंसता नहीं। जिसको यह ज्ञान हो जाता है वह संसार को मुसाफिरखाना समझता है। संसार के सारे चक्करों को देखता है उनमें रहता है, मगर उनमें फंसता नहीं है। यह है यम की फांसी कट जाना।

धन्य धन्य गुरु धन्य दयाला. धन्य उधार सुसहज कृपाला।
तुम्हारी दया कटो जम फांसी, तुम्हारी कृपा अविधा नासो।

अविधा क्या है? अज्ञान। अब इस महात्मा के अन्तर मेरा रूप प्रकट हुआ। यह अज्ञानी था और भ्रम में था कि होशियारपुर वाला बाबा फकीर उसके अन्तर आया। मैं नहीं गया। मेरा संस्कार गया। इसने मेरी कोई किताब पढ़ी हुई होगी। इसलिए तो दूसरे गद्दी वालों ने मेरा साहित्य अपने यहां बन्द किया हुआ है ताकि जो भोले भाले गृहस्थी उनके जाल में फंसे हुये हैं वह निकल न जायें।

मैं एकता के लिए आया हूं। यदि मेरे आने से किसी के काम को हानी पहुंचती हो तो मैं यहां आना नहीं चाहता मुझे गुरु बनने की हवस नहीं है। मैं तो

सन्तमत को जानना चाहता था और उसका परिणाम देखना चाहता था। इस का परिणाम क्या है ? जीवनमुक्त अवस्था। शान्ति। मगर यह गुरु की दया से मिलती है। गुरु किसी को फूंक मार कर शान्ति नहीं दे सकता। गुरु भेद बताता है और सच्चा ज्ञान देता है। अमल करना तुम्हारा काम है। मगर, तुम लोग इस भेद और सच्चे ज्ञान के अधिकारी नहीं हो तुम को तो धन, मान और सन्तान चाहिए इसलिए यह सन्तमत सब के लिए नहीं है। यदि किसी के पुत्र नहीं है तो यह तो कर्म का खेल है। इस जज्बे को पूरा करने के लिए लोग दुसरों का बच्चा गोद में ले लेते हैं। यह है क्या ? पिछले जन्म का लेना देना। कोई गुरु बन कर लेता है, कोई चेला बन कर लेता है, कोई भाई वन कर, कोई जेव कतरा बनकर और कोई डाकू बन कर लेता है।

आप लोग आये हैं आप को सत्संग कराना चाहता हूं। यह सारा संसार माया का है। माया है बुद्धि, सूक्ष्म प्रकृति। जब तक किसी को कोई सच्चा गुरु नहीं मिलता उसको माया की समझ नहीं आती। मगर, ऐसा गुरु नहीं जो यह कहता है कि तुम्हारे

अन्त समय पर तुम को ले जाऊंगा। यदि वह तुम्हारा दिल रखने के लिए कहता है और उसकी नीयत साफ है तो वह भी धन्य है। और यदि वह झूठ बोल कर संसार को अपने जाल में फंसाता है तो वह गुरु नहीं है। तुम लोगों को धोखा दिया गया है। मगर तुम लोग धोखे में खुश रहते हो। अब तुम देखो। यह साधु धोखे में था। आठ आदमियों को साथ लेकर यहां आया। किराये का कितना रुपया खर्च हुआ और फिर मंदिर की भी सेवा की। मैं तुम लोगों को अज्ञान में रखकर लूटना नहीं चाहता। बल्कि, तुम लोगों को इस लूट से बचाना चाहता हूं। यदि मेरी सचाई के कारण मेरी शिक्षा को फैलाने के लिये मंदिर की कोई आदमी सहायता करता है तो मुझे बहुत खुशी है। मगर, मैं छल-कपट से किसी से कुछ लेना नहीं चाहता, मंदिर चले या न चले। मैं हूं समय का सन्त सतगुरु। निष्काम और निष्कपट हूं। मैं उदार हूं। बिना किसी निजी स्वार्थ के तुम लोगों को सच्चा ज्ञान देता रहता हूं। मगर तुम लोग इस के अधिकारी नहीं हो। तुम लोग तो मुझसे बच्चों के जाल कटवाते हो। मैं हूं ब्राह्मण मगर, तुम लोग मुझ से

नाई का काम करवाते हो। तुम्हारे प्रेम की कदर करने के लिए मुझे नाई बनना पढ़ता है। यह माया का चक्कर है। जीव निबल, अवल और अज्ञानी है। जिस प्रकार मां-बाप अपने छोटे बच्चों की गलतियों पर हंसते हैं, खुश होते हैं और प्रतीक्षा करते हैं कि वह बड़ा होकर बुद्धिमान हो जायेगा। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मुझे आज्ञा दी थी कि चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। उन्होंने कहा था :-

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा।
दुखी जीव को अंग लगाकर, ले जा गुरू के देसा॥
तीन ताप से जीव दुखी है, निबल अवल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

तुम निबल क्यों हो ? अधिक विषय भोगने के कारण। इस से निर्बलता आ जातो है और बिमारीयां घेर लेती हैं। मैं भी बरी नहीं। मैं तुम्हारी तरह ही था यह तो हजूर दाता दयाल जी महाराज ने दया कर दी और मेरी आंख खुल गई। तुम निबल हो। क्योंकि, तुम्हारे मन में श्रद्धा और विश्वास नहीं है। तुम अज्ञानी हो। क्योंकि तुम को असलियत का पता

नहीं है। इस को दूर करना गुरु की दया है। गुरु किसी को फूंक मार कर नहीं तार सकता। गुरू समझ, विवेक और ज्ञान बेता है। मगर यह सब को नहीं मिलता और न ही यह एक दिन में मिलता है। जैंसे छोटे बच्चे को समझने में देर लगती है, ऐसे ही इस ज्ञान, भेद और विवेक को समझने के लिए समय लगता है। मैं गुरुओं, सन्तों, हंसों और समझदार व्यक्तियों के लिए आया हूं। मुझसे अब "क, ख, ग" नहीं पढ़ाया जाता। हर एक आदमी का अपना २ कर्तव्य होता है। मेरे पास अधिकतर बकील, डाक्टर और पढ़े लिखे आदमी आते हैं या वे आते हैं जिन्हों ने तीस २ वर्ष से नाम लिया हुआ है, अपना सारा जीवन पन्थ में गुज़ार दिया और उनको कुछ मिला नहीं। वह मुझसे लाभ उठाते है और मेरी Radiation से लाभानिवत होते हैं। यदि मैं स्वयं कपटी हूं या लालचो हूं और यह सोचता हूं कि बाहिर जाकर दस हज़ार रुपया इकट्ठा करके ले आऊं तो मेरी Radaition से तुम में भो वही गुण आयेंगे, तुम भी लालची बन जाओगे। "Human body is a Radio Station" इस में से धारें निकलती रहती है। में 1950 स्विटज़रं लैण्ड

में यह धारें परदे पर (Screen) देखी गई थीं। इस लिए जवान से चाहे कितनी प्रेम की बातें करो यदि मन में प्रेम नहीं है और घृणा और द्वेष है तो अन्तर से धारें निकल कर दूसरों पर प्रभाव करेंगी और तुम्हारे घर की अशान्ति का कारण बनेगीं। इसलिए कहा गया है कि :—

पानी पीजिए छान कर और गुरु कीजिए जान कर।

इसलिए ऐसे आदमियों की संगत करो जिनके हृदय शुद्ध हैं मुझे किसी से द्वेष नहीं है। सब आदमी एक जैसे नहीं होते। हर एक की जुदा जुदा प्रकृति होती है और सबके लिए जुदा जुदा शिक्षा होती है। मेरा सत्संग समझदार आदमियों के लिए है। मैं आजाद विचार हूं। मुझे हज़ूर दाता दयाल जी महाराज ने जीवन के अनुभवों से गुज़ारा और मुझे इस भेद की समझ आ गई।

गुरु बतावें साध को, साध कहें गुरु पूज।
अरस परस के मैल से, बूझी बूझ अबूझ।

गुरु कहता है कि साधू के पास जाओ। और साधू कहता है कि गुरु के पास जाओ दोनों के मेल से असलियत की समझ आ जाती है। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने आज्ञा दी थी कि

सत्संगियों की सेवा करो। अब हजूर दाता दयाल जी महाराज की सेवा और सत्संगियों की सेवा के मेल हो जाने से मेरी आंख खुल गई।

तुम्हारी दया कटी जम फांसी, तुम्हारी कृपा अविधा नासी।

मेरी यम की फांसी जिस प्रकार कटी वह मैंने आप लोगों को बता दिया राधास्वामी मत में जीवत गुरु की पूजा करते हैं और उसकी संगत करते हैं मुख्य गुरु की पूजा नहीं होती। बच्चों के साथ और व्यवहार किया जाता है, स्त्रियों के लिए और शिक्षा है और तुम लोगों के लिए और शिक्षा है और जो परमार्थ चाहते हैं उनके लिए और शिक्षा है।

गोकल सिंह! तुम से कहता हूं कि बच्चा! मुझको वहां ले जाने से क्या होगा? मेरी बात को ले जाओ और अमल करो। तब तुम्हारा कल्याण होगा। यदि तुम मुझ को ले भी जाओ और मेरी बात पर अमल न करो तो केवल मेरे जाने से तुम्हारा कल्याण नहीं होगा।

जड़ चेतन का बन्ध कटाना, सकल उपाधि भरम हटाना।

जड़ चेतन का बन्ध क्या है? तुम स्वयं चेतन हो प्रकाश स्वरुपी आत्मा हो। प्रकाश रुपी आत्मा जब शरीर में आता है तो मन, चित्त बुद्धि

अहंकार पैदा हो जाते हैं और ग्रन्थी बन जाती है। जैसे सूर्य की किरण पत्तों के रस में फंस जाती है। वैसे ही जब प्रकाश रूपी आत्मा शरीर में आता है और (Spernatoza Jerm) में प्रवेश करता है तो वह उस में फंस जाता है। तुम चेतन हो और शरीर जड़ है। चेतन जब जड़ में फंस जाता है तो किसी को बाप समझने लग जाता है, किसी को भाई समझता है, किसी को वहन, किसी को स्त्री, किसी को कुछ और किसी को कुछ समझने लगता है। तुम अपने आप को भूल गये और जड़ को सत समझने लग गए। मुझे ज्ञान हो गया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। कौन जाता है ? संस्कार जाता है। मेरे अन्तर जो भाव, विचार और संकल्प पैदा होते हैं मैं इन में फंसता नहीं। लेकिन, जब कभी यह ज्ञान भूल जाता हूं। मैं भी फंस जाता हूं जो लोग गुरु को अपने अन्तर में बनाते हैं उनकी चेतन अवस्था में जड़ फंसी हुई है। जैसे यह साधू फंस गया आठ आदमियों को साथ लेकर कितनी दूर से मेरे पास होशियारपुर पहुंचा। इस का चेतन रूप अन्तर के फकीर के रूप में फंस गया और उसके साथ बन्ध गया। मुझ पर तो गुरु ने दया कर दी।

मुझे ज्ञान दे दिया और अब मैं बन्धन में नहीं आता बन्धन से निकलना बहुत कठिन है।

बन्धे तुन गाढ़े बन्धन आन।

पहले वन्धन पड़ा देह का. दूसरा तिरया जान।
तीसरा वन्धन पुत्र विचारो. चौथा नाती मान।
नाती के कहीं नाती होवे. फिर कहो कौन ठकान।
धन सम्पति और हाट हवेलो. यह बन्धन क्या करूं वखान।
चौलड़ पंच लड़ सत लड़ रसरी बन्ध लिया अब वहो विध
तान।

ये सब बन्धन हैं। इन बन्धनों को तोड़ने का उपाय क्या है? गुरु के प्रेम का एक बन्धन रखो। यद्यपि यह भी बन्धन है, मगर इस बन्धन से बाकी सब बन्धन छूट जायेंगे। यदि गुरु पूर्ण है तो वह तुम्हारा यह बन्धन भी छुड़ा देगा और तुम को तुम्हारे असली रूप का ज्ञान करा देगा।

कौन है इस बात को समझने वाला? मगर, मैं अपना कर्तब्य पूरा कर जाना चाहता हूं। गुरु का भी बन्धन है। मगर गुरु का बन्धन भी धन्य है। इस से तुम्हारे अन्य सब बन्धन कट जायेंगे और फिर वह वन्धन भी चला जायेगा। किसी ने स्त्री से प्रेम किया

किसी न पुत्र से प्रेम किया और किसी ने बाहर के गुरु से प्रेम किया। क्या अन्तर है ? इस लिए गुरु का प्रेम भी बन्धन है। मगर, पूरा गुरु, सब बन्धनों से छुटकारा दिलाता है। जैसे तुम्हारा बाप मरा। उसके सब बन्धन छूट चुके थे। केवल, एक बन्धन मेरे रूप का था। उस एक बन्धन को काटने के लिए उसे चोला मिलेगा और वहां उसको कोई ऐसा गुरु मिलेगा जो उस को उस चोले से और उस बन्धन से छुड़ा देगा। मैं गुरु भक्ति के विरुद्ध नहीं हूं। मन सहारा चाहता है और बन्धन में रहना चाहता है। गुरु का बन्धन दूसरे बन्धनों से धन्यहै। शरत यह है कि किसी पूर्ण गुरु का बन्धन हो। मैं स्वयं बन्धा हुआ था। लेकिन, हजूर दाता दयाल जो महाराज ने मुझे यह काम देकर छुड़ा दिया। अब मैं उनको अपने से जुदा नहीं समझता। अब उस अवस्था में रहता हूं जहां न गुरु है और न चेला है। इस लिए किसी पूर्ण गुरु का बन्धन रखो और उसके सत्संग में जाते रहो। आज नहीं तो कल या कल नहीं तो उससे अगले दिन तुम्हारे बन्धन कट जायेंगे। मगर, लोग पार होने के लिए नहीं आते। वह तो संसारिक इच्छा के लिए

मेरे पास आते हैं और स्वार्थ के लिए ही मुझे बुलाते हैं। लोगों का यह विश्वास है कि यदि हम बाबा जी को अपने घर में, दुकान में या किसी कारोबार में ले जायेंगे तो उनका कारोबार बढ़ जायेगा और मैं भी यह इच्छा करता रहता हूं कि जो मेरे सम्पर्क में आये उसको खाने को भोजन, पहनने को कपड़ा और रहने को मकान मिले और उसके मन को शान्ति मिले। परमार्थ मिले या न मिले उनकी मैं परवाह नहींकरता। जो भी मेरे पास आता है उसको मैं यही कहता हूं कि Health, wealth and Peace to you लोग विश्वास करते हैं और उनके सारे काम होते रहते हैं और वह प्रसन्न रहते हैं। अब आप सोचो कि क्या वह परमार्थ के लिए मेरे पास आते हैं ?

नानक कोटन मैं कोऊ, नारायण जिन चीत।

मुझ पर जिस प्रकार गुरु की दया हुई वह मैंने आपलोगों को बता दिया। गोकल सिंह। जिन लोगों ने तुमको मुझे ले जाने के लिये भेजा है उनको मेरा यही संदेश दे देना जो कुछ कि मैंने यहाँ कहा है।

अब नहीं व्यापे काल न आया। अब मैं रहूँ न जग उरझाया॥

मेरे काल और माया कैसे कटे ? तुम लोगों की दया से मुझे यह ज्ञान हो गया कि जब मैं किसी के अन्दर नहीं जाता तो मेरे अन्तर भी कोई नहीं आता और यदि आता है तो वह असलियत नहीं है। वह ओरसंस्कार माया है। अब मैं संसार मैं रहताहूं। बाल-बच्चों वालाहूं। संसार के सारे काम करता हूं। तुम लोगों से भी मिलाता हूं। मगर, किसी चीज में फंसता नहीं। क्योंकि मैं संसारके रुप को जानता हूं।

जीवन मुक्ति दशा चित लाऊं। जल में कमल सगान रहाऊं।

जीवन मुक्ति मिल गई। जीवत हूं। किसी वस्तु के बन्धन में नहीं हूं। जो बिचार, भाव और रुप-रंग मेरे अन्तर प्रकत होते हैं उनके मूल कारण Root cause को जानता हूं। इनमें न फंसना ही जीवन मुक्ति है। तुम्हारे पिता जी बाकी तो सब बन्धनों को तोड़ गये, मगर गुरु का बन्धन न तोड़ सके। इसलिए उनको दूसरा चोला अवश्य मिलेगा। कौन गुरु सचाई बताता है।

ऐ गुरुओ ! तुम को पूछने वाला कोई नहीं था। अब मैं आया हूं अनामी धाम से। सुनो ! सन्तमत

क्या कहता है । कबीर साहिब की ज़बानी सुनो ।

जीवन मुक्त सीई मुक्ता हो ।
जब लग जीवन मुक्ता नाहीं । तब लग दुख सुख भुगता हो ।।
देह संग न होवे मुक्ता । मोय मुक्ति कहां हुई हो ।।
तीरथ वासी होय न मुक्ता । मुक्ति न धरनी सोई हो ।।

लोगों को यह बिचार दिया गया है कि यदि काशी में, हरिद्वार में या गुरु के दरबार में मरोगे तो मुक्त हो जाओगे यह सब पाखण्ड है । जिस को संसार की ठोकरें लगी, ज्ञान हुआ और संसार से वैराग्य हुआ वह परमार्थ की ओर आता है । जब तक वैराग्य नहीं, परमार्थ कैसा और मुक्ति कैसी ? इस-लिए राधास्वामीमत या सन्तमत सर्व साधारण के लिए नहीं है । सर्व साधारण के लिए वेद मार्ग अर्थात "शिव संकल्पं अस्तु" है । नेकी करो, परोपकार करो, धर्म-कर्म करो, अच्छी संतान पैदा करो और एक दूसरे की सहायता करो। जब इस ओर से उसादी आ जाए तो फिर किसी गुरु की खोज करो । तब तुम्हारा बेड़ा पार होगा । मेरा सत्संग ऊंचा है । आप पलियां कलां वाले लोगों को नमस्कार करता हूं । आप जैसे लोगों ने मेरा बेड़ा पार कर दिया । मुझे सचाई की खोज थी । इस खोज के कारण मैंने क्या कुछ नहीं किया ।

तुम लोग मेरे पास आते हो तो धन मांगते हो, पुत्र मांगते हो। लेकिन, हम लोगों ने न धन मांगा और न पुत्र मांगा। हमने वह वस्तु माँगी जिसकी हमें खोज थी। मैं देखना चाहता था कि सन्तों के पास कौन सी ऐसी विशेष वस्तु है जिस के कारण उन्होंने सब का खण्डन कर दिया। इन के पास है सतज्ञान कि ऐ मानव तू कौन है ?

मैं पैंतीस वर्ष से यह काम करता हुआ चला आ रहा हूं। मानवता मंदिर बनाया। आज तक मेरे स्वप्न में न कभी मानवतामन्दिर आया और न कभी तुम लोग आये। लेकिन, रेल और तार का महकमा जहां मैंने अपने पेट के लिए या अपने स्वार्थ के लिए नौकरी की वह अब तक भी स्वप्न में मेरा पीछा नहीं छोड़ता। कभी २ मेरे माता-पिता, स्त्री और लड़की भी स्वप्न में आ जाता है। क्योंकि, इनके साथ मेंने अपने स्वार्थ के लिए प्रेम किया। जो काम हम अपने निजी स्वार्थ के लिए करते हैं उस का आकार या संस्कार हमारे मस्तिष्क में रहता है और वहां स्वप्न में शकल बना कर हमारे सामने आता है और जो काम हम निष्काम करते हैं उनका संस्कार हमारे

मस्तिष्क पर नहीं आता। यदि अन्तिम समय पर मेरे सामने रेल तार या स्त्री बच्चे आ गए तो पता नहीं मेरा क्या परिणाम हो। मैंने अपनी स्त्री के जीवन के अन्तिम अठाइस (28) वर्ष में अपने ब्रह्मचर्य का पालन किया। जब वह मर गई मरने के २½ वर्ष बाद मेरे स्वप्न में आई और कहने लगी कि आपने मेरे साथ बहुत अन्याय किया। स्वप्न में मैंने उस के साथ काम भोगा। उस के जीवन काल में मैंने परमार्थ के लिए उससे यह व्यवहार किया मैंने अपने जज्वात को वश में रखा और मैं उस के जज्वात को भी समझता था। क्या मेरे स्वप्न में मेरी स्त्री आई ? नहीं। वह मेरा अपना ही विचार, अपना ही विश्वास और अपनी ही श्रद्धा थी। मैंने जो कुछ समझा वह आप लोगों को बता दिया। आप लोगों को समझाने के लिए मैंने अपना कोई परदा नहीं रखा। मैं ग़लत गुरुआई नहीं करना चाहता। आग लगे ऐसी गुरुआई को। यदि झूठ बोलकर धन इक्ट्ठा करके ले जाऊंगा तो वह धन मुझे खा जायेगा। इसलिए मैं स्पष्ट वर्णन करता हूं। किसी की इच्छा करे मेरे सत्संग में आये, न करे न आये। दिल चाहें

मेरी कोई किताब पढ़े या न पढ़े। दिल चाहे मंदिर में पैसा दे या न दे। मुझे इस बात की परवाह नहीं है। यदि मैं यह इच्छा रखूं तो फिर मैं तो फंस गया। यह मंदिर या तुम लोग मेरे स्वप्न में क्यों नहीं आते? इसलिए कि मैं निस्वार्थ हूं और मंदिर से या तुम लोगों से मूझे कोई लगाव नहीं है :—

जीवत भरम की फांस न काटी, मोय मुक्ति की आसा हो।
जल प्यासा जैसे नर कोई, स्वप्ने फिरत प्यासा हो।

जैसा संस्कार होगा वैसी ही शकल बना कर तुम्हारे सामने आयेगा। इसलिए अपने स्वप्न को सदा वाच (Watch) किया करो। जैसे तुम्हारे मन के भाव होते हैं वैसे ही तुमको स्वप्न आते हैं। मैं स्वयं डरता रहता हूं कि अन्त समय पता नहीं मेरे साथ क्या हो "नथ खसम दे हथ्थ"। मैं यह नहीं कहता कि मैं सन्त हो गया हूं। मेरे जिम्मे कर्तव्य था। इसलिए जो समझा वर्णन कर दिया। जिस का जी करे सुने और अमल करे। जिस की इच्छा न करे, वह न करे मुझे इसमें से क्या लेना है?

हुये अतीत बन्धन ते छूटे। जहां इच्छा तहां जाई हो॥
बिना अतीत सदा बन्धन में। कित हौ जाने न पाई हो॥

जीवन में अतीत अर्थात निर्बन्ध हो जाओ। यदि जीवन में ज्ञान हो जाये तो फिर तुम्हारे बन्धन कट गये। फिर जहां तुम्हारी इच्छा हो वहां जाओ। लेकिन, अतीत हो जाने से मेरा यह भाव नहीं कि तुम अपने बाल-बच्चों को छोड़ दो। तात्पर्य तो यह है कि संसार के सारे काम करो। मगर, इनमें फंसो नहीं। मैं तुम लोगों से बातचीत करता हूं, तुम्हारी सुनता हूं, जो समझ में आता है वह बताता हूं। मगर किसी बात में फंसता नहीं। यह है नाम :—

जैसे जल में कमल नरालम मुरगावी निशानिए।
सुरत शब्द भव सागर तरिए नानक नाम बखानिए॥

यह है नाम। पांच नाम या राम राम या अल्ला २ यह तो नाम की ओर जाने के साधन हैं।

आवागवन से गये छूट के सिमर नाम अविनाशी हो।
कहै कबीर सोई जन गुरु है काटी भरम की फांसी हो॥

जो आदमी बाबे फकीर का या किसी भी गुरु का रुप बनाते हुये और उसका सुमिरन करते हुये मरेगा वह बन्धन में रहेगा, वह उस मालिक को पा नहीं सकता। इसलिए अविनाशी को जपो। अविनाशी तुम्हारा अपना निज स्वरूप है और वह अटल है। देखो कितने उत्साह से यह बात कह रहा हूं कि जो

आदमी बाबे फकीर को, हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज को या किसी और गुरु को ही सारा जीवन गुरु समझता रहेगा वह मुक्ति को प्राप्त नही कर सकेगा ? मैं ही समय का सगुरु और सच्चाई वर्णन कर रहा हूं। तुम लोगों को अपने जाल में नहीं फसाता। मैं तो तुम लोगों को जाल से निकाल रहा हूं

धन्य धन्य गुरु धन्य दयाला, धन्य उदार सुसहज कृपाला।

मैं हूं उदार। उदार वह होता है जो बिना किसी मुआवजे के किसी को कुछ देता है। मैं हूं परम दयाल। पहले सब दयाल थे। किसी ने उनकी सेवा की तो उसके कान में भेद बता दिया। मैं हूं परम दयाल। कोई सेवा करे या न करे मैं सब सच्चाई खोल खोल कर बता रहा हूं। इसलिए मैं परम दयाल हूं और कोई मुझ में विशेषता नहीं आ गई। जो ज्ञान मैंने जीवन में प्राप्त किया है वह बिना किसी स्वार्थ के संसार को बता रहा हूं। मगर, मुझे इस बात का कोई दावा नहीं है कि जो कुछ जीवन में मैंने समझा है वही ठीक है। हो सकता है कि गलत हो। लेकिन एक बात जरूर है कि मेरी नीयत स्वच्छ है। हजूर दाता दयाल जी महाराज और हजूर बाबा सावन

सिंह जी महाराज ने यह काम करने की आज्ञा दी थी। इस लिए मैं यह काम करता हू अन्यथा में न गुरु हूं और न महात्मा हूं। क्या उनको यह पता नहीं था कि मैं सच्चा आदमी हूं और सच्ची बात कहूंगा ? इस गुरुआई से गुरु लोग अपनी सम्पत्तियां बना गए। संसार को सचाई नहीं बताई और परदे में रख कर उनसे धन मान और प्रतिष्टा ली। क्या वह अच्छा कर गये ? नहीं। उन्होंने ग़ल्ती की और उन की गलतियों के कारण आज सारा संसार दुख उठा रहा है। मैं उस परदे को हटा कर संसार के इस दुख को दूर करना चाहता हूं। जैसे तुम लोग अपने बाप का क्रिया कर्म करते हो ताकि उस की रुह को शान्ति मिले। ऐसे ही मैं भी इन मरे हुये गुरुओं का क्रिया कर्म कर रहा हूं ताकि उनकी आत्मा को शान्ति मिले।

तुम्हरी दया कटो जम फांसो तुम्हारी कृपा अविधा नासी।
जड़ चेतन का बन्ध कटाना, सकल उपाधि भरम हटाना॥

मेरी तो उपाधि मिट गई, लेकिन, मैं जो कुछ कहता हूं तुम वहाँ नहीं ठहर सकते। मैं स्वयं सब कुछ जानता हुआ और समझता हुआ भी किसी समय

गिर जाता हूं ? क्योंकि अपने वश में कुछ नहीं है। इसलिए शरणागतम। दाता तेरी मौज। इस समय का मेरा यह मार्ग है। मैं जीवन में बहुत दौड़ा, बहुत ज्ञान प्राप्त किया। जानता हुआ भी भूल जाता हूं। इसलिए शरणागतम, शरणागतम, शरणागतम। जैसी तेरी मोज, वैसे कर, इसलिए मेरा मार्ग अब शरणागतम है। इस समय तक मेरा यह अनुभव है। कल को यदि कोई और अनुभव हो तो वह भी बता जाऊंगा। जैसे जैसे मेरा अनुभव बदल रहा है वैसे ही मैं भी बदल रहा हूं। कुछ वर्ष पहले मेरे भाषण और थे। पिछले साल और थे और अब और हैं। कभी २ मुझे मन बहुत बुरी तरह पटक देता है। बाद में पछताता हूं। मेरे वश में कुछ नहीं है। इसलिए शरणागतम। जीवन में बहुत दौड़ा। अब हार गया। इसलिए सिवाय शरणागत के और कोई चारा नहीं है।

अब नहीं व्यापे काल न भाया, अब मैं रहूं न जग उरझाया।

ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी में उलझता रहा। मगर शरणागत होने में मैं नहीं उलझता। यदि गल्ती हो जाती है तो शरणगत हो जाता हूं। उस गल्ती का बोझ मन से उतर जाता है।

तुम लोग आये हो बच्चा। सब सत्सगियों को मेरी राधा-स्वामी कह देना। उन से कह दो वह

व्यास डेरे को लिखें। यदि वह आज्ञा दें तो फिर मेरे सत्संग में आओ और यह फिर मुझे लिख दो मैं आ जाऊंगा। मैं संसार में फूट डालने के लिए नहीं आया मैं एकता के लिए आया हूं। मैं यह नहीं कहता कि जो नाम तुमको मिला है वह न जपो। मेरे जिम्मे तो गुरु का ऋण है। मुझे उन्होंने आज्ञा दी थी कि फकीर! चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। मैं काम नहीं करना चाहता था। इसलिए हजूर बाबा सावन सिंह जी महाराज के पास गया और कहा कि में काम नहीं करना चाहता। क्योंकि मैं सचाई बताऊंगा तो लोग मेरे विरुद्ध हो जायेंगे। उन्होंने कहा कि फकीर? एक तो डेरे के कारण मुझ से सच नहीं कहा गया और दूसरे जीव भी अधिकारी नहीं। तुम सच्चे और सुच्चे फकीर हो। निर्भय होकर काम करो। मैं तुम्हारा संरक्षक रहूंगा। इसलिए मैं यह काम करता हूं। अन्यथा मुझे क्या लेना है इस काम से? यदि तुम को व्यास डेरे से आज्ञा मिल जाये तो मेरे पास आओ और मेरा सत्संग सुनो। अन्यथा नहीं। यदि आप मुझे बुलाओगे तो मैं सिर के बल आकर तुम्हारे चरणों पर मत्था टेकूंगा।

जीवन मुक्त दशा चित लाऊं। जग में कमल समान रहाऊं॥

कमल की तरह रहो। कमल सदा पानी को सतह पर रहता है। यदि पानी नीचे चला जाता है तो कमल भी नीचे चला जाता है और यदि पानी ऊपर चढ़ जाता है तो कमल भी ऊंचा आ जाता है। अब 88 साल की आयु में ज्ञान-ध्यान को छोड़ गया। इस समय का मेरा यह अनुभव है जो वर्णन कर रहा हूं। संसार में रहो, मगर, फंसो नहीं। कई बार मुझे ऐसा विचार आ जाता है जिस को में नहीं चाहता। मगर बह आता है। इसलिए मेरे बस में कुछ नहीं है। सिवाय शरणागत के मेरे पास और है ही क्या ?

कर्म अकर्म ज्ञान अज्ञाना। दून्द अवस्था से विलगाना॥
चेतन घन आनन्द घन वासी। घन आनन्द न पास सुपासी॥

अब मुझे पता लग गया कि ज्ञान ध्यान जो कुछ मैं करता था वह सब माया है। अब मैं इस से अलग हो गया। मैं चेतन हूं। मैं सब कुछ हूं और कुछ भी नहीं। मेरा रुप तो अकह, अपार, अगाध और अनाम हो। मैं सब कुछ करता हूं। मगर किसी वस्तु में फंसता नहीं।

जीवन में विदेह गति पाई, जनक राज की बजी बधाई॥

मैं विदेह गति में जाने का यत्न करता रहता हूं। मगर अभी तक पूरी दशा उसकी मुझे मिली नहीं। विदेह गति क्या है ? शरीर रखते हुये शरीर को भूल जाना। मेरा मन होता है। मगर, मैं मन से संकल्प नहीं करता। प्रकाश होता है। मगर मैं उस की परवाह नहीं करता। प्रकाश मेरी सुरत की देह है ओर शब्द में ज़ात की जान है। मैं इनमें रहता हूं। मस्तिष्क में एक ऐसी अवस्था आ जाती है कि जहां न गुरु है न चेला है। न राम है और न भगवान है। प्रकाश और शब्द को भी भूल जाता हूं। कभी २ यह सोचता हूं कि क्या मैं पथ भ्रष्ट हो गया ? नहीं। मेरी यह दशा आनी ही थी।

गुरु मिले सीतल भया। दूर भया उत्पात॥
राधा स्वामी की दया। काल करे नहीं घात॥

उत्पात करना क्या है ? शरारतें करना। मेरे अन्तर जो रूप रंग मुझे अपनी ओर खेंचते थे अर्थात मेरा मन शरारतें करता था, अब मैं उससे निकल गया। जब प्रकाश और शब्द को भूल जाता हूं तो फिर मैं कई बार सोचता हूं कि क्या मैं पथ भ्रष्ट हो गया हूं। क्या मैं पथ को छोड़ गया ? नहीं। अभी

मुसाफर चल रहा है। अभी तक मुझ में इस अवस्था की परिपक्वता नहीं आई। स्वामी जी महाराज की बानी सुनो :–

जेठ महीना जेठा भारी, जोवन हृदय तपन करारी।

मेरे हृदय में तपन थी। मैं राम को मिलना चाहता था। अब कहां पहूंचा ?

सन्त दयाल जीव हितकारी। भेद कहे अब निज कर भारी॥

सन्त दयाल होते हैं और वह जीवों को सार भेद बताते हैं। हजूर दाता दयाल जी महाराज ने भी तो मुझे भेद ही बताया कि सहस दल कमल त्रिकुटि सुन महांसुन और भंवर गुफा में चलो। में सुन महा सुन में फंसा हुआ था। वहां से निकालने वाले आप सत्संगी हैं। यह गोकल सिह जैसे सत्संगी मेरे गुरु हैं जिन्होंने मुझे यह कहा कि आपका रूप हमारे अन्तर प्रकट होता है। इन अनुभवों से मुझे समझ आ गई और मेरी निचली योनियां सब छूट गई। मुझे ज्ञान हो गया कि जिस प्रकार की किसी को वासना होगी उसी प्रकार की शकलें उसके स्वप्न में और साधन अभ्यास में उसके सामने आयेंगी और उसी प्रकार का प्रकाश और शब्द प्रकट होगा। जब वासना रहित हो जाओगे

तो फिर जो शब्द अन्तर पैदा होगा वह सार शब्द होगा ।

नहीं खालक मखलूक न खलकत, करता कारन काज नादक्कत
वहां अन्तिम मंजल पर न दृष्टा है और न दृष्टी है ।
दृष्टा दृष्ट नहीं कोई दरसत, वाच लक्ष नहीं पद न पदारथ ।
वहां न कोई दृश्य है और न ही कोई देखने वाला है ।

वह क्या अवस्था है ? वह वह अवस्था है जहां जाकर मैं सब कुछ भूल जाता हूं । मगर, अभी तक मुझसे वहां ठहरा नहीं जाता ।

जात सफात न अव्वल आखर, गुप्त व प्रगट बातन जाहर ।
राम रहीम करीम न केशो, कुछ नहीं कुछ नहीं कुछ नहीं थासो

वह मेरा निजस्वरुप है और वह वह वस्तु है जो प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है और शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है ।

सिमरति शास न गीता भागवत, कथा पुरान न वक्ता कीरत ।
सेवक सेव न दास न स्वामी, नहीं सत नाम न नाम अनामी ।

इसलिए मैं कहा करता हूं कि मैं कौन हूं ! मैं चेतन का एक वुलबुला हूं । Evolution के सिलसिले में बन गया । जब टूटेगा तो कहां जाऊंगा ? न पहले था और न बाद में होगा । Silence in the begining & Silence in the end जखो समाप्त हो गई ।

कहां लग कहूं नहीं था कोई । चार लोक रचना नहीं होई ।
जो कुछ था सो अब कह भाखूं । उन्मन सुन वसमाधी राखूं ।

यह अवस्था मेरा आद है । मेरा ही नहीं वह सबका आद है । सब चेतन के बुलबुले हैं । उस परम तत्व में हिलोर हुई और जीव जन्तु बन गये और फिर उसी में समा गये । जैसे गन्दे पानी में जीव पैदा हो जाते हैं और फिर उसो में समा जाते हैं । ऐसे ही वह मालिक भी बेअन्त है । किसी को उसका कोई अन्त नहीं मिला । जो उसको ढून्ढ़ने गया वह उसमें गुम हो गया :-

लव खुले और बन्द हुये यह राजे जिन्दगानी है ।

जिस प्रकार के ग्रहों या प्रकृति से कुदरत जीवों को बनाती है उसके अनुसार जीव यहां खेल खेलते हैं । यह संसार एक तमाशा है ।

यह जग नाटकशाला साधो, यह जग नाटकशाला ।।
राजा रंक फकीर औलिया दृश्य वचित्र विशाल ।
कोई ओढ़े शाल दोशाला कोई सिर कमल काला ।।
सुरत ने अदभुत भेस बनाये, नाचे नाच रसाला ।
गावें भाव दखावें छिन छिन खेलें खेल रसाला ।।
ब्रह्मा वेद से रचा जगत को विषनू गदा से पाला ।
शिव संघार का साज सजावे । साथ भूत बेताला ।।
नाचे कमला दुरगा सरद, काली छवी विकराला ।

सावित्री का राग गायत्री, सैन वैन का जाला ॥
संख वाद की धूम मची है डमरू शोर कराला।

यह सब नाटक शाला है। हमारा आदि न प्रकाश और न शब्द है।

रारंग सारंग बजी सारंगी, वीन सतार सुहाला।
श्रुति धुन है उदगीत है, वाणी ओम ओम का ताला।
श्रोतागन सब सुनने आये, मन में भय भहाला।
साथ दृष्टा साक्षी रूप है, सुख दुख मन से टाला।

मैं कहा करता हूं कि मैं कौन हूं ? मैं न शरीर हूं, न मन हूं, न प्रकाश हूं और न शब्द हूं। हां। प्रकाश को देखता हुआ और शब्द को सुनता हुआ मस्त रहता हूं। मगर है यह भी बन्धन। जो शब्द के पीछे पड़ा हुआ है वह शब्द के बन्धन में है और मंज़ल पर नहीं पहुंचा। कोई प्रकाश के बन्धन में है, कोई गुरु-स्वरुप के बन्धन में है और कोई मन के चक्कर में है। कोई भी मंज़ल पर नहीं पहुंचा। संसार में सब कुछ करो। लेकिन फंसों नहीं और बन्धन में मत आओ।

जिसने अपना रूप बिसारा उर उपजा दुख साला।
साक्षी देखे विमल तमाशा, चित रहे सुखी सुखाला।

यदि एक दिन तुम्हारा शब्द नहीं खुलता, प्रकाश नहीं आता या गुरु स्वरुप के दर्शन नहीं होते तो तुम दुखी होते हो कि हाय आज यह नहीं हुआ और वह नहीं हुआ या गुरु स्वरूप के दर्शन नहीं हुये। साक्षी बन के रहो। तुम उस मालिक के अंश हो। तमाशा देखने के लिए यहां आये हो चार दिन का जोवन है। खूब खेलो और खूब हंसो। जिस स्थान से हम आते हैं। समय आयेगा कि हम उसी में समा जायेंगे। यह सच कर खुश रहो।

भूल भरम में जो कोई आया, सहे करम का भाला।
रैन का स्वप्ना जग की लीला, स्वप्ना धन और माला।
आंख खुली तव कुछ नहीं दरसा, गुप्त जो देखा भाला।
राधास्वामी सन्त रूप धर आये, दीन वन्धू सुधयाला।
प्रेम प्याला हमें पिलाया, सहज किया मतवाला।

प्रेम किस का? उस मालिक का जो अकह, अपार अगाध और अनामी है। तुम को सत्संग करा दिया। मेरे पास सिवाय शुभ भावना के और कुछ नहीं है या जो ज्ञान मैंने जीवन में प्राप्त किया है वह देता हूं। मैं चाहता हूं कि तुम को सच्चा ज्ञान

और सच्ची बुद्धि मिले। खावे को भोजन, पहनने को कपड़ा, रहवे को मकान और मन को शान्ति मिले।

Health ,wealth and Peace to you.

सब को राधास्वामी

‡ मित्र ‡

लेखिक :- सेठ दुर्गादास साहिब, चण्डीगढ़

राधास्वामी। मित्र शब्द ही कितना सुन्दर और दिल को लुभानेवाला है। मन को आन्नद देता है। दो-सत अर्थात दो सच्चे आदमियों का आपिस में प्रेम हो जाये तो दोस्त (मित्र) कहलाते हैं। क्योंकि दोनों में सचाई है, सत है। मित्र कहलवाना बहुत आसान है लेकिन मित्र बनना बड़ा कठिन है। कौन किसीका मित्र हो सकता है ? वह प्राणो मित्र हो सकता है जिसमें सच्चा प्रेम हो। स्वार्थ नाम को भी न हो। सच्चा प्रेम तभी हो सकता है, यदि दोनों एक ही आयु के हों, एक ही धर्म को माननें वाले हों, एक जैसे विचार हों, एक जैसा जज्वा हो, जीवन का एक ही उदेश्य हो, एक जैसे भाव हों, एक जैसी प्रकृति हो, एक जैसे गुण हों। फिर मित्रता हो सकती है।

मित्र दुखी न हो दुखारी, ता पे विपता आवत भारी।

मित्र कहलवाना और मित्र के दुख सुख में दुखी सुखी न होना धोका है। यदि किसी को मित्र कह

दिया है तो मित्रता पर कायम रहो। मित्रता निभाओ मित्रता के सिधान्तों पर चलो।

मित्र ने तो कभी कोई बुरा काम नहीं किया है। कभी बुरी बात नहीं कही। कभी बुराई को आंख से नहीं देखा। किसी बुरी बात को कान से कभी नहीं सुना। यदि आपका कर्म उसके विरूद्ध हो तो फिर आप मित्र कैसे हो सकते हो। नहीं, नहीं। मित्रता बिल्कुल नहीं। ऐसी मित्रता दिखावे की है। जो किसी तूफान के आगे ठहर नहीं सकती। ऐसी मित्रता को अस्थाई और स्वार्थ पूर्ण मित्रता कहा जाता है। यह मित्रों में गुण है कि वे एक दूसरे के अच्छे गुण ग्रहण करते हैं और एक दूसरे का रूप हो जाते हैं।

जब मित्र के गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार नहीं चल सकते हो, जब मित्र का मान नहीं कर सकते हो, फिर मित्र कैसे। परम पुरष पूरन धनी राय साहिब जी फरमाते है।

जो मेरे प्यारे को प्यार करे, मोहे प्यारा लागे री।

यह सुनहरी शब्दों में लिखे जाने के योग्य है। मित्र का मित्र मित्र हुआ करता है। जैसे मित्र का मान अपने मन में है ऐसा मान मित्र के मित्र का भी

होना चाहिए। यदि नहीं हो सकता है तो प्यारे का प्यारा आपको कैसे प्यारा लगेगा। यदि प्रीतम का प्यारा आपको प्यारा नहीं लगता तो प्रेमियों की सूची से अपना नाम निकाल डालो। आप प्रेमी कहलाने के अधिकारी नहीं हैं। प्रेमी वह है जो प्रीतम और प्रीतम के प्रेमी में कोई अन्तर नहीं समझता है। यह बिलकुल सच्ची बात है। सिद्धान्त को बात है।

इस ब्रह्माण्ड के बनाने वाला एक ही ईश्वर है। वह सबका मालिक है। हम सब इसके बच्चे हैं। सब इसको प्यार करते हैं। यदि हिन्दु, मुसलमान, सिख, इसाई, और यहूदी, संसार के सब धर्मों के अनुयाई ईश्वर से प्यार करते हैं तो इनका आपस में लड़ाई झगड़ा, फसाद घृणा और अत्याचार नहीं होना चाहिए। लेकिन ये तो आपस में लड़ते झगड़ते रहते हैं। इसलिए सचाई यह है कि ऐसे लोग ईश्वर से प्यार नहीं करते हैं बरना ईश्वर को प्यार करने वाले के लिए ईश्वर के बन्दों से प्यार होना चाहिए। ईश्वर का प्यारा मेरा प्यारा। असूल है.

मित्रों में आपस में प्रेम हुआ करता है। यह प्रेम निःस्वार्थ और बेलाग होता है। दूसरे लोग देखने वाले ऐसे प्रेम को देखकर चकित रह जाते हैं।

प्रेम छुपाया न छुपे, जा घट परगट होय।
जो अपने मुख बोले नहीं, नैन देत है रोय॥

सब से पहली बात जो दो मित्रों में होनी चाहिए जो बहुत आवश्यक है कि मित्र अपने मित्र के दोष इसको बतलाये और उसके दोष दूर करे। दोष और गलती का बतलाना मित्र का पहला कर्तव्य और धर्म है। जो मित्र ऐसा नहीं करते वे मित्र कहलाने के अधिकारी नहीं हैं।

मित्र वह है, जो मित्र के काम आये। दुख कष्ट और रोग में मित्र का साथ दे। मित्र की सहायता करे। यदि इस समय मित्र मित्र के काम नहीं आता। वह मित्र कहलाने का अधिकारी नहीं है :-

मित्र मित्र में प्रेम और सहानुभूति होनी चाहिए। ऐसे प्रेम और सहानुभूति का उदाहरण संसार में एक ही है। जो जौड़े बच्चे पैदा होते हैं। इनका आपस में प्रेम देखो। इनमें से एक कलकत्ता में रहता है दूसरा दिल्ली में रहता है। यदि एक को बुखार हो जाये तो दूसरे को दिल्ली में उसी समय बुखार हो जायेगा। यह बिल्कुल सच्ची बात है।

महाराज जी फरमाते हैं :—

मित्रां नाल करेन्दे ठगियां, हुंदे जन्म कसाई।

जो मित्र अपने मित्र के साथ, प्रेमी के साथ, सम्बन्धी के साथ, भला चाहने वाले के साथ ठगी, फरेब और धोखा करता है वह अगले जन्म में कसाई होता है। ऐसे व्यक्ति को यह सख्त दण्ड मिलता है कि जन्म जन्मान्तर नर्क भोगता रहता है। ऐ मानव तू इससे बच। कबीर साहिब फरमाते हैं :-

कामी तरे क्रोधी तरे पापी तरे अनन्त।
आनउपासक कृतघन तरे न नाम रटन्त॥

कबीर साहिब फरमाते हैं कि कामी भी भव पार हो जायेगा, क्रोधी भी पार हो जायेगा और पापी भी तर जायेंगे। लेकिन दूसरे की पूजा करने वाला और अपना भला चाहने वाले का उपकार न मानने वाला कभी भव-जल पार नहीं होगा, कभी उसको शान्ति नहीं मिलेगी चाहे वह नाम का जाप ही करता रहे।

कई समय के मित्र होते हैं। उनका उदाहरण थाली के बैंगन से दिया जाता है। जिस ओर को थाली झुकी उधर को ही लुढ़क गये। अपना स्वार्थ सदा

सामने रखते हैं। उनकी पहचान कठिन है। क्योंकि ये बड़े होशियार होते हैं। असलियत को छुपाने में सफल रहते हैं।

सब को राधास्वामी।

सूचना

कई सज्जन मानवता मन्दिर होशियारपुर की सहायताथ धन राशि चैक व ड्राफट द्वारा भेजते समय मानवता मन्दिर का नाम लिख देते हैं किन्तु मानवता मन्दिर का सब हिसाब किताब फकीर लाईब्रेरी चैरीटेवल ट्रस्ट के हाथ है, इस लिये चैक और ट्राफट फकीर लायब्रेरी चैरीटेवल ट्रस्ट के नाम भेजने चाहियें, ताकि हिसाब रखने में सुविधा रहे।

सैक्रेटरी
मानवता मन्दिर

नकल चिट्टी दिनांक १६ जनवरी १९७६ श्री के एल जैन के नाम पर

प्यारे के. एल. जैन, राधास्वामी ।

आपका तीन हज़ार रूपये का चैक आया था वह वापिस किया गया है । आपने अपने पत्र में लिखा है कि जब आप काबुल (अफगानिस्तान) गये तो मेरा रूप आपके साथ रहा और वहाँ मैंने तुमको बहुत बड़े आदमियों की कतार (लायन) में खड़ा कर दिया आप ने लिखा है कि मेरे रूप ने आपको 5000 रु० मानवता मन्दिर में भेजने को कहा है । जब आपकी बहन का विवाह था तो उस समय भी आपने लिखा था कि मेरा रूप विवाह में आपके साथ रहा और तुमको हर समय काम के बारे हिदायत करता रहा और मेरे रूप ने आपको कहा है कि आज ही मानवता मन्दिर में 11/- रु० भेज दो और आपने 11/- रुपये का T.M.O. भेजा था ।

आप लोगों की दया से मैंने असलियत, हकीकत, सचाई और शान्ति को प्राप्त किया है । देखो जैन साहिब ! इस फकीर चन्द ने जो होशियारपुर में रहता है तुमको न 11/-रु० भेजने को कहा है और न ही

5000/- रुपये भेजने को कहा है। वह किसने कहा ? वह तेरा अपना ही आत्मा है। जिस प्रकार के संस्कार और विचार मानव के मस्तिष्क पर प्रालब्ध कर्मों के अनुसार और कुछ देखने से, सुनने से, छूने से या किताबें पढ़ने से मस्तिष्क पर पढ़ते हैं वही शकलें बनाकर इन्सान के सामने आते हैं। तुमने गुरु-मत को नहीं समझा। संसारी वासनाओं के अधीन तुम्हारे विश्वास और श्रद्धा के कारण यह तुम्हारे मन के अन्तर सारा खेल होता है। मैं फकोर के रूप में और ब्राह्मण होने के नाते आपको या संसार को अज्ञान में रखकर लूटना नहीं चाहता। इसमें शक नहीं कि मेरे मन में यह इच्छा अवश्य रहती है कि मंदिर का काम चलता रहे। क्योंकि तुम मेरा ध्यान करते हो और मेरे अन्तर यह वासना है कि मन्दिर की कोई सहायता करता रहें। इसलिए हो सकता है कि मेरी वासना का संस्कार तुम्हारे मस्तिष्क पर पड़ा हो। मैंने तो तुमको कभी यह नहीं लिखा कि तुम मंदिर में रुपया भेजो। इसलिए यदि खुशी से और परोपकार के विचार से तुम यह रुपया मानवता मंदिर में देना चाहते हो तो दे दो अन्यथा यदि आप

इस विचार से मुझे यह 5000/- रु० देते हैं कि मैंने आपसे कहा है कि रुपया भेजो तो क्योंकि मैंने नहीं कहा। इसलिए मैं रुपया लेने से इन्कार करूंगा।

जो कुछ मेरे पास है उसको तो कोई लेना नहीं चाहता। मेरे पास है अनुभव, ज्ञान, और सार भेद ताकि जीव काल और माया के चक्कर से निकल जायें और उनको असलियत हकीकत और सचाई मिल जाये। मैंने यह मानवता मंदिर बनाया। क्यों! ये जितने मतमतान्तर और धर्म हैं, ये सारे के सारे जीव को मन के चक्कर में ही रखते हैं। क्योंकि हजूर दाता दयाल जी महाराज ने मेरे जिम्मे निबल अबल और अज्ञानी जीवों की सहायता का काम लगाया था। मैंने सार भेद बताने के लिये यह काम किया है। दोस्त! सत्गुर, नाम है सतज्ञान का और तुम्हारी श्रद्धा और विश्वास का। तुम बहुत भाग्यशाली व्यक्ति हो। तुम्हारा विश्वास बैठ गया है। तुम्हारा विश्वास और तुम्हारी श्रद्धा काम करती है। मैं संसार की आंखों में मिट्ठी डालकर अपना उल्लू सीधा करना नहीं चाहता। मंदिर में पैसे की मुझे

भी आवश्यकता है मगर मैं सचाई से काम करना चाहता हूं। यदि मैं यह सच्ची बात तुमको नहीं बताता तो यह आपका 5000/- रुपया मेरी जान को भी खा जायेगा और मानवता मंदिर को भी खा जायेगा।

आपका फकीर

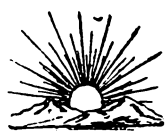

पत्र व्यवहार द्वारा ज्ञान

पत्र नं० १

प्यारे भाई सा: राधास्वामी !

मैं ७-१२-७५ को बाहर जा रहा हूं। १८ या १७ को वापस आऊंगा। तुम्हारे पिताजी ने कहा था कि आपको कुछ दया कर दूं। आपने भी मुझे लिखा था। इन्सान के अंतर कोई चीज़ है वह कुछ चाहता है। इन्सान के अन्तर काम है, कोध है, लोभ है, मोह है, अहंकार है इसके इलावा उसके अन्तर आत्मा या रुहानियत की इच्छा है, यह जीवन है, यह काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार ओर रुहानियत जज्बात है, इन जज्बात का लुत्फ लेने के लिये जब तक इन जज्बात का कोई रूप या Ideal नहीं बनाया जायगा वह जिन्दगी या हस्ती के खेल का अनुभव नहीं कर सकता मिसाल के तौर पर समझो, इन्सान में काम है, जब तक वह किसी को अपनी स्त्री नहीं मानेगा वह काम का लुत्फ नहीं ले सकता। लोभ

है, जब तक किसी चीज़ को दौलत न समझेगा नोटों जवाहरात सोने चांदो को, वह लोभ का अनुभव नहीं कर सकता। ऐसे ही मोह है, जब तक कोई किसी को अपना लड़का लड़की या भाई बहन नहीं मानेगा वो मोह का लुत्फ नहीं ले सकता। जब तक कोई अपने आप को कुछ मान नहीं लेता वह अपनेअहंभाव का लुत्फ नहीं लेगा एसे ही जब तक वो आत्मानंद या रूहानियत का कोई रूप नहीं मानता कोई Ideal नहीं बनाता वह रूहानियत या आत्मपद के आन्नद को हासिल नहीं कर सकता। बगैर इष्ट बगैर Ideal के हमारी जिंदगी के जितने ज़ज्बात हैं इनका लुत्फ नहीं ले सकता। देखा होगा कि कई लोगों को संतान नहीं हाती वे उसका आन्नद लेने को किसी को मुतबन्ना बना लेते हैं।

मैं आपके जज्बात की कदर करता हूं। मुबारिक हैं वह जिंदगीयां जिनको रूहानियत या ईश्वर या परमेश्मर या बगैरह का जज्बा पैदा होता है। इस रूहानियत में सफर करने के लिए निराकार का Ideal काम नहीं देता क्यों कि उसका कोई रूप नहीं आकार नहीं, इसलिए हम लोग संतजन उस आत्म-

पद का इष्ट गुरु को मानते हैं । प्रारभ में, हम उसको प्रकाश और शब्द तसलीम करते हैं। तो जब तक कोई आदमो अपने अन्तर में प्रकाश और शब्द को जिसका दूसरा नाम पारब्रह्म और शद्वब्रह्म नहीं इष्ट बनाएंगे हम रूहानियत या आत्मानंद का लुत्फ नहों ले सकते ।

दुनियां में तजर्बा बताता है के लड़के से मोह किया अगर लड़का आज्ञा कारी नहीं रहा तो मोह का लुत्फ जाता रहेगा । औरत बेवफा निकली वो उस लुत्फ से भी घबरा ज यगा । दौलत है चली गई वो उससे भी उदास हो जायेगा । इसी तरह जब इन्सान किसी बाहर के गुरु को इष्ट बना लेता है रूहानियत हासिल करने के लिए अगर बाहर का गुरु कोई कुकर्म करे या और किसी कारण से तो उसका दिल रूहानियत का लुत्फ नहीं ले सकता । इस लिये हिंदु शास्त्रों में और सन्तों में सावित्रो प्रकाश पारब्रह्म व शद्वब्रह्म का इष्ट कर दिया है वह तुम्हारे अपने अन्तर में है । अगर हो सके तो अपने अन्तर प्रकाश व शब्द का साधन करो । बाकी फिर कभी मौका मिलेगा आपके जबाव आने पर लिखूंगा ।

बाहर के गुरु की यह ड्यूटी है कि वह जीव की प्रकृति को देखकर उसके भ्रम और शंका दूर करे और उसे यह यकीन करादे कि आत्मानन्द था रुहनियत इन्सान के अंतर में है खोपड़ी में है बाहर नहीं मैं यही कोशिश करूंगा कि तुम्हारी बुद्धि को निश्चयात्मक और अडोल बना दूं । बस ।

आपका फकीर

पत्र नं २

१२-११-७५

विब्बो ! राधास्वामी

गुरु के चरण प्रकाश हैं और गुरु का रुप है शब्द गुरु के गुण ज्ञान हैं और हैं अनुभव।

गुरु तेरा होशियार नहीं रहता, वह तेरे अपने ही है अंतर।
कहते कहते थक गया मैं मगर समझ न आई निरंतर॥

पर खैर अगर तुम मुझे ही गुरु मानती हो तो मुझे फकीर चंद मस्तराम का पुत्र होशियारपुर का रहने वाला मत मानो। वह तुम्हारे मन में दिल में रहता है। यह सच जानो।

मुझे भी दाता लिखा करते थे कि फकीरा गुरु तो तेरे पास।
समझ आती थी नहीं और रहता था उदास॥

बिब्बो ! तेरे करिश्मों ने जो तेरे अंतर मेरे रुपने किये जो तुम्हारे ही विश्वास का फल था। मुझे यकीन हो गया गुरु हर समय अंतर में ही रहता है। तुम्हारा विश्वास है तुम्हारी ही आस है। जिनकी यह समझ में बात नहीं आती उनके अपने भाग हैं। मेरा

जो धर्म है वह मैं पूरा करता रहता हूं व सच्चे दिल से चाहता हूं मालिक तुम्हें शान्ति दे गुरु तुमको मिले या न मिले शांति तुमको मिले । शांति ही सदगुरु का रूप है । समझ सकती है तो समझले नहीं तो कुछ दिन और करम का फल भोग ।

मेरा प्रोगराम नंदलाल से पूछो ।

तेरा सच्चा हितैषी,

पत्र नं ३

श्री विनोबा जी महाराज राधास्वामी ।

अज़ल से जानने हस्ती तलाशे यार में आया ।

वचपन से कोई चीज़ मेरे अन्तर है । जो कुछ तलाश करती है । इस सिलसिले में मैं मेरे कर्म भोग या उस मालिक की इच्छा के अधीन एक दृश्य द्वारा 1905 में दाता दयाल महर्षि श्री शिवबतलाल जी महाराज के चरणों में गया था । उन्होंने उस कुरीद को मिटाने के लिए जो मेरे अन्तर तलाश थी, यह साधन बताया था और साथ ही तीन काम सपुर्द किये थे :—

एक हुकम था :-

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेसा ।
दुखी जीव को अंग लगाकर, लेजा गुरु के देसा ॥
तीन ताप से जीव दुखी हैं, निबल अबल अज्ञानी ।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी ॥

दूसरा हुकम था :-

तेरा रूप है अदभुत अचरज तेरी उत्तम देही ।
जग कल्याण जगत में आया परम दयाल सनेही ॥

तीसरा हुकम था :-

भवसागर से जीवों को निकालना।

आज मैं 89 साल का हूं। 1931 से मैंने काम करना शुरु किया है। इंसान बनो की आवाज़ उठाई। मानव मंदिर की स्थापना की। चन्द महीने हुये श्री फकरूदीन अली अहमद साहिब और प्रधान मंत्री ने धार्मिक संसार वालों को Co-operation इत्तहाद और शान्ति में रखने की तालीम देने को कहा। मैंने इस सिलसिले में एक किताब इंसानियत लिखी। उसका अंग्रेजी तर्जुमा लिखकर प्रेस में भेजा। सैंसर वालों वे बहुत सी बातें ना मंज़ूर की। इसलिए वह छपवाई नहीं। अब सुना है कि श्रीमती इन्द्रागांधी ने आपको कहा है कि आप संत हैं। मुल्क की शान्ति के लिये कुछ उपाय करें। मैं यह अंग्रेजी का मसौदा जो मैंने शाया नहीं करवाया, आपके चरण कमलों मैं भेंट करता हूं। अगर आपकी आत्मा में ये मेरे विचार अच्छे मालूम होते हैं तो इन असूलों पर जो मैंने इसमें दर्ज़ किये हैं, प्रचार करना चाहे तो करें।

तुख्म की तासीर और सोवत का असर ज़ाया नहीं जाता। खट्टे को आगर आप मीठा बनाना चाहें

तो प्योंद लगाकर किसी हद तक कामयाबी होगी। मगर वह खट्टा बिलकुल मीठा नहीं होगा। आजकल जितनी कोशिशें मानव-कल्याण की, की जा रही हैं। ठीक हैं मगर इससे पूरा फायदा होना नामुमकिन है। खुदरौ ओलाद जो पैदा हो रही है। इससे संस्कारों का धोना कठिन है। क्योंकि मेरे जिम्मे यह डयूटी थी। मैंने इन तीनों फर्जों को जो मुझको लगाये, जो कुछ मेरी समझ में आया वह कहता हुआ चला आ रहा हूं। गुरु का ऋण था, उसको उतारता हूं।

बुरा न मानना, महात्मा गांधी पोलोटिकल लाईन के गुरु थे। स्वराज्य मिलगया। बाद में उन्हों ने कहा था कांग्रेस को डिज़ाल्व कर दो। दूसरा समाज पैदा करो। कांग्रेस वालों ने गुरु की आज्ञा का पालन नहीं किया। यह ठीक है कि कांग्रेस ने जितना काम किया है, बहुत है। मगर 25 साल में जो कुछ किया उसको आप जानते हैं। आर्थिक, टेक्नोलाजो या दीगर बातों में बहुत उन्नति हुई मगर Discipline इखलाक पहले से अजहद खराब हुआ।

मैं जानता हूं, यह दुनियाँ कुत्ते की दुम है। बारह वर्ष नलकी में रखो, टेड़ी की टेड़ो। कई दफा

सोचता हूं दाता ने मुझको यह काम क्यों दिया।
शायद मेरी जिन्दगी की घड़त के लिए काम दिया हो।
मैं देखता हूं, लाखों अवतार आये, पीर आये, संत आये
साधू आये। क्या दुनियां सुधर गई। बुद्ध और जैन
की अहिंसा कहां गई। महात्मा गांधी का इत्तहाद
कहां गया। 1929 में हिन्दु मुसलमानों ने एक जगह
जामा मसजिद में पानी पिया। 1947 में आपस में
एक दूसरे के सिर कटे।

पात पात को सींचते बिरबा गया सुखाय।
माली सींचे मूल को, डाल पात फल आये॥

इसलिए मेरे अनुभव में Majority को
अपनी असलियत का ज्ञान देना समझ देनी
है। किसीको सब्जबाग दिखाना लालच
समय तक तुम उनको अपना हमख्याल
हो। मगर वक्त के बाद वह उनका इत्तह
है।

मुझे बहुत खुशी हुई कि आपने
आप रूहानियत पर बोला करेंगे।
तवज्जाह को अपने अंतर
समझा है।

अपना कुछ लिटरेचर भेंट कर रहा हूं और उस को
से, गुरु फर्ज से जो मुझ पर मेरे सतगुर ने लगाया है
उत्तीर्ण होना चाहता हूं। जो सलूक तुम्हारी मर्जी
हो, जो राय आप देना चाहें।

मैंने अपना फर्ज पूरा किया।

आपके चरणों में मेरा नमस्कार

फकीर !

उ
उ
दक
बना
द टूट
कहा है
हानियत
प्रकाश औ
स खत द्वार

सूचना

आंखों का मुफ्त इलाज

ऐसे सज्जन जो कि आर्थिक अवस्था के कारण आंखों का इलाज नहीं करा सकते, उन की सेवा के लिये मानवता मन्दिर, सुतहरी रोड, होशियारपुर में अस्पताल पांच फरवरी 1976 से खोला गया है। आंखों के रोगों से पीड़ित लाभ उठा सकते हैं।

इस शुभ कार्य के लिये आंखों के विशेषज्ञ Dr. M.L. Ahuja Asstt Surgeon (e. i.) Retd. Ex House Surgeon K. J. Free Eye Hospital Bhiwani की सेवायें प्राप्त की गई हैं।

सक्रेट्री :-
मानवता मन्दिर
सुतहरी रोड़, होश्यारपुर।

मेरा विचार

कल यहां ट्रस्ट की मीटिंग थी। ट्रस्टी सज्जन निर्णय करना चाहते थे कि मंदिर के जो कर्मचारी हैं वे सब प्रातः शाम अभ्यास और साधन किया करें। इसकी जानकारी मुझे मिली, मेरा अपना विचार है कि जो यहां कर्मचारी अथवा निवासी हैं उनको यदि हम आदेश करें कि वे अवश्यमेव प्रातः शाम साधन करें तो हमारा यह कार्य सिद्ध करता है कि हम टेकी और पक्षपाती हैं। दूसरों पर बलपूर्वक यह काम ठोंसना चाहते हैं, जिस तरह कि साम्प्रयायक स्कूलों में संध्या के समय सम्प्रदाय के नियमानुकूल हाज़री देनी पड़ती है, मैं इससे सहमत नहीं हूं। क्यों ? साधन या अभ्यास करना यह जीव के अपने कल्याण के लिए है। जिस साधन से और जिस मार्ग पर चलकर कोई अपना कल्याण करना चाहता है, करे, मुझे कोई अधिकार नहीं है कि किसीको बलपूर्वक किसी विचार धारा का बन्दी बनाऊं। यहां जो कर्मचारी हैं, ये

अपने पेट के लिए और जीविका उपार्जन के विचार से रहते हैं। हां। जो भाई बाहर से आते हैं। उनके लिए साधन और अभ्यास का प्रबन्ध है। वे बैठें और साधन करें। जिसने भी साधन करना है वह अपने लिए करना है। मुझपर कोई उपकार नहीं करना। हां मंदिर में जो कर्मचारी या निवासी हैं, उनका मानवता के नियमों पर चलना अनिवार्य है। यदि कोई उलंघना करता है तो ट्रस्ट को पूरा अधिकारी है कि वह उसको अपनी संस्था से बाहर निकाल दे।

मानवता मंदिर के नियम निम्नलिखित हैं।

1. आचार व्यवहार का शुद्ध रखना, स्त्री जाति को मां बहन जानकर सम्मान करना।
2. किसी भी दशा में दुसरे के मन को न दुखाया जाय यानि मधुर बचन बोलना।
3. चोरी किसी भी प्रकार की न हो।
4. किसी धर्म पंथ और सभ्यप्रदाय के विरुद्ध न कुछ कहना और न करना।
5. मंदिर की चार दीवारी में मांस शराब का सेवन न करें।

6. राजनीति के विषय में कोई वार्तालाप न हो।
7. अनुशासन, सबका सत्कार और बड़ों की आज्ञानुसार आचरण करना सर्वप्रथम कर्तव्य है।

फकीर

सूचना

मानव मन्दिर का मैंने कोई मूल्य नहीं रखा। क्योंकि मुझे दाता दयाल महर्षि शिवव्रत लाल जी महाराज ने चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदलने की आज्ञा दी थी। मैंने जो कुछ समझा और अनुभव किया वह किसी धर्म या पन्थ के धर्मग्रंथों से नहीं लिया। यह मेरा निज अनुभव है। क्योंकि निज अनुभव का नाम ही ज्ञान है, मैं अपने ज्ञान को बेचता नहीं। तुलसीदास जी ने रामायण में भरत की जबानी यह ख्याल जाहिर किया है कि ब्राह्मण के लिए वेद का बेचना महापाप है। वेद नाम है ज्ञान का। इस पत्रिका के पढ़ने वालों को संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ रही है। मैं यह हाथ जोड़ कर पढ़ने वालों से प्रार्थना करूंगा कि अगर किसी को इसके पढ़ने में रुचि न हो और जीवन को नियम-बद्ध बनाने की जरूरत न हो या इन मेरे विचारों से किसी को सन्तुष्टि, उत्साह, खुशी और शान्ति न मिलती हो तो वह मानव मन्दिर को न मंगवाए और जो मंगवा रहे हैं अगर लिख दें तो हम न भेजें। अगर कोई यह समझता है कि मेरे इस काम से किसी को फायदा पहुंचता है तो वह मानवता मन्दिर की सहायता करे ताकि यह काम जारी रखा जाय।

पत्र व्यवहार में मानव मन्दिर का क्रमांक नं० जरूर दिया करें।

—फकीर

Regd. No. 26265/74

MANAV MANDIR

P—Hsp—7

1283

ADDRESS

To

Sri A. Hanumantha Rao

H. No. 10-3-194/8 Humayun Na

Hyderabad. 28

500028. (A.P)

From:

MANAVTA MANDIR

SUTEHRI ROAD,

HOSHIARPUR.